

## टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिकी कुंडू - सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ  
दिल्ली प्रदेश भाजपा



गोपनीयता को मौलिक अधिकार नहीं माना गया था।

3. भारत में प्रमुख विवाद और चुनौतियाँ

1. डेटा संरक्षण कानून:- भारत सरकार ने 2023 में डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट पारित किया। इसका उद्देश्य लोगों की निजी जानकारी को सुरक्षित रखना है लेकिन आलोचकों का कहना है कि इस कानून में सरकार को इतनी छूट दी गई है कि वह अपने एजेंसियों को इस कानून से मुक्त (Exempt) कर सकती है - यानी सरकारी निगरानी को वैध बना सकती है।

2. आधार कार्ड और निगरानी:- आधार योजना में हर नागरिक की फिंगरप्रिंट, आइरिस स्कैन और निजी जानकारी ली जाती है। कई बार डेटा लीक, ट्रैकिंग और प्रोफाइलिंग जैसी घटनाएँ सामने आईं। सुप्रीम कोर्ट ने आधार को वैध माना, लेकिन इसके उपयोग को सीमित किया - केवल वित्तीय और कल्याणकारी योजनाओं के लिए ही इस्तेमाल किया जा सकता है।

3. पेगासस जासूसी मामले:-

2021 में खुलासा हुआ कि कई पत्रकारों, नेताओं और एक्टिविस्टों के फोन पर पेगासस स्पायवेयर से निगरानी की गई। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर जाँच समिति बनाई और कहा - "बिना वैधानिक अनुमति के निगरानी गोपनीयता के अधिकार का उल्लंघन है।"

4. कानून और वास्तविकता का अंतर:-

1. कानून में: गोपनीयता मौलिक अधिकार है।

2. वास्तविकता में: सरकारी निगरानी, डेटा चोरी और डिजिटल मॉनिटरिंग आम भी आम है। इसलिए नागरिकों की निजता आज भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है।

4. पड़ोसी देशों की स्थिति (भारत की तुलना में):- देश कानूनी स्थिति वास्तविक स्थिति,

1. पाकिस्तान संविधान के अनुच्छेद 14 में घर की गोपनीयता की रक्षा का अधिकार दिया गया है। लेकिन फोन टैपिंग और ऑनलाइन निगरानी आम है।

2. बांग्लादेश गोपनीयता पर

कम जोर कानूनी सुरक्षा; "डिजिटल सिविलिटी एक्ट" के तहत निगरानी। पत्रकारों और सोशल मीडिया पर निगरानी की शिकायतें।

3. नेपाल 2015 के संविधान में गोपनीयता को स्पष्ट मौलिक अधिकार माना गया है। कानूनी ढाँचा अच्छा है, लेकिन तकनीकी सुरक्षा कमजोर।

4. श्रीलंका डेटा प्रोटेक्शन एक्ट का मसौदा बना है। मीडिया और इंटरनेट पर राजनीतिक निगरानी देखी जाती है।

5. चीन गोपनीयता का मौलिक अधिकार नहीं; सरकार का पूर्ण नियंत्रण। चेहरे की पहचान, इंटरनेट सेंसरशिप और निगरानी सर्वव्यापी।

6. भूटान संविधान में पत्राचार और संवाद की गोपनीयता का अधिकार है। सीमित निगरानी; डिजिटल सुरक्षा सामान्य रूप से बेहतर।

5. वैश्विक संदर्भ

• यूरोपीय संघ (ईयू) में जीडीपीआर (जनरल डेटा प्रोटेक्शन

रेगुलेशन) सबसे सशक्त गोपनीयता कानून है।

• अमेरिका में एक समान राष्ट्रीय कानून नहीं है, बल्कि अलग-अलग सेक्टरों के लिए अलग कानून हैं।

• भारत का डीपीडीपी कानून यूरोपीय मॉडल पर आधारित है, लेकिन इसमें स्वतंत्र निगरानी संस्था की कमी है।

6. निष्कर्ष:- भारत में गोपनीयता का अधिकार अब कानूनी रूप से मौलिक अधिकार बन चुका है, लेकिन कानून और वास्तविकता के बीच अभी भी बड़ा अंतर है। तकनीकी निगरानी, डेटा सुरक्षा की कमजोरी और सरकारी एजेंसियों की असीम शक्ति, इस अधिकार की मूल भावना को कमजोर करती है। भारत के लिए अब सबसे बड़ा लक्ष्य है - राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाना। क्योंकि सच्चे लोकतंत्र में नागरिक की निजता ही उसकी स्वतंत्रता की आत्मा होती है।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत  
tolwaindia@gmail.com  
tolwadelhi@gmail.com

## दिल्ली की यह सड़क अस्थायी रूप से बंद, घर से निकलने से पहले देख लें नया रूट



दिल्ली में बेली ब्रिज के निर्माण के कारण रिंग रोड को 11 से 14 अक्टूबर तक अस्थायी रूप से बंद किया गया है। धौला कुआं से नारायणा मार्ग 11 और 13 अक्टूबर को रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक और नारायणा से धौला कुआं मार्ग 12 और 14 अक्टूबर को समान समय पर बंद रहेगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। बेली ब्रिज के निर्माण के चलते रिंग रोड को 11 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। इससे लोगों को यात्रा के दौरान असुविधा हो सकती है।

ट्रैफिक पुलिस ने एक एडवाइजरी जारी कर बताया है कि बेली ब्रिज निर्माण के चलते रिंग रोड (पिलर संख्या 60-62, धौला कुआं से नारायणा) अस्थायी रूप से बंद रहेगा।

ट्रैफिक पुलिस के अनुसार, धौला कुआं से नारायणा रूट 11 और 13 अक्टूबर को रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक और नारायणा से धौला कुआं रूट 12 और 14 अक्टूबर को रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक बंद रहेगा।

वैकल्पिक रूप से, लोगों को वंदे मातरम मार्ग, स्टेशन रोड और कृपा मार्ग का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। साथ ही, लोगों को यथासंभव सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

## बारिश की वजह से दिल्ली एयरपोर्ट पर 70 से 80% उड़ानों में देरी, 14 फ्लाइट्स डायवर्ट

दिल्ली के आईजीआई एयरपोर्ट पर मंगलवार को हुई बारिश का असर उड़ानों पर देखने को मिला। लगभग 70% आगमन और 80% प्रस्थान उड़ानें देरी से हुईं। औसतन आगमन में आधा घंटा और प्रस्थान में 40 मिनट की देरी हुई। काठमांडू पटना और मुंबई समेत 14 उड़ानों को लखनऊ चंडीगढ़ और जयपुर की ओर मोड़ा गया। बाद में मौसम ठीक होने पर उड़ानें दिल्ली पहुंचीं।

नई दिल्ली। मंगलवार को हुई वर्षा का असर आईजीआई एयरपोर्ट की उड़ान सेवाओं पर पड़ा। आगमन से जुड़ी करीब 70 प्रतिशत उड़ानें विलंबित रहीं। इसी के साथ प्रस्थान की करीब 80 प्रतिशत उड़ानें विलंबित रहीं। आगमन में विलंबित उड़ानों में औसतन करीब आधा घंटा विलंब दर्ज किया गया। वहीं प्रस्थान में करीब 40 मिनट का औसत विलंब दर्ज किया गया।

वर्षा के कारण दिल्ली के लिए आ रही कई उड़ानों को डाइवर्ट करना पड़ा। इसमें काठमांडू, पटना, रांची, मुंबई, गुवाहाटी, हैदराबाद, श्रीनगर, जोधपुर, गोवा, मिराज, दुबई, गोवा व बंगलुरु की उड़ानें शामिल रहीं। दिन में पौने चार से शाम पांच बजे के बीच कुल 14 उड़ानें डाइवर्ट हुईं। इन्हें लखनऊ, चंडीगढ़, जयपुर एयरपोर्ट पर डायवर्ट किया गया। बाद में मौसम सुधरने के बाद ये उड़ानें नई दिल्ली पहुंचीं।

## दिल्ली एयरपोर्ट मेट्रो लाइन से होगी गुरुग्राम की सीधी कनेक्टिविटी, केंद्र सरकार ने प्रस्ताव को दी मंजूरी

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार हरियाणा सरकार के अनुरोध पर गुरुग्राम को दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सीधे मेट्रो से जोड़ने के लिए सहमत हो गई है। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन इस परियोजना पर काम कर रहा है जो नई दिल्ली से धौला कुआं होते हुए पालम विहार तक मेट्रो लाइन का विस्तार करेगी। इस परियोजना से गुरुग्राम के निवासियों को हवाई अड्डे तक सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी।

नई दिल्ली। दिल्ली और हरियाणा एनसीआर के शहरों के बीच मेट्रो की कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए मोदी और नायब सरकार ने एक लक्ष्य और तय किया है।

दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट मेट्रो लाइन से गुरुग्राम को सीधे जोड़ने की योजना है। नई दिल्ली से धौला कुआं होते हुए एयरपोर्ट आने वाली मेट्रो लाइन का गुरुग्राम के पालम विहार तक विस्तार दिया जाना है। इसके लिए दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन की ओर से काम आरंभ कर दिया गया है। प्रोजेक्ट की फाइल एक माह में बनकर केंद्र की वित्तीय समिति के पास जाएगी। उसके बाद केंद्रीय कैबिनेट की ओर से स्वीकृति दी जानी है।

करीब दो माह में यह कार्य पूरा करने के बाद मेट्रो लाइन के लिए जमीन लेने की प्रक्रिया आरंभ हो जाएगी। चार साल में प्रोजेक्ट को पूरा कर लिया जाएगा।

गत एक अक्टूबर को मुख्यमंत्री नायब सिंह सेनी ने नई दिल्ली आकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की थी। उसी दौरान गुरुग्राम में मेट्रो



नेटवर्क के विस्तार पर चर्चा हुई।

सीएम ने पीएम से आग्रह किया कि गुरुग्राम के लोगों को एयरपोर्ट आने-जाने के लिए मेट्रो लाइन की जरूरत है। प्रधानमंत्री ने आग्रह को स्वीकार करते हुए तुरंत केंद्रीय शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल से बात की, तो उन्होंने प्रस्ताव को बेहतर बताया।

इसके बाद प्रधानमंत्री ने इस नई लाइन को बिछाने के लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए। नई दिल्ली से धौला कुआं होते हुए एयरपोर्ट आने वाली मेट्रो लाइन को गुरुग्राम के पालम विहार तक विस्तार दिया जाना है।

इस नई लाइन का अंतिम स्टेशन गुरुग्राम के पालम विहार स्थित एक बड़े प्राइवेट अस्पताल के निकट बनेगा। दिल्ली के दूसरे से उद्योग विचार तक के लिए आने वाली दूसरी लाइन का इंटरचेंज स्टेशन बनेगा। ऐसा होने पर गुरुग्राम के लिए दिल्ली से तीन रूट हो जाएंगे।

अभी केवल दिल्ली से गुरुग्राम के मिलेनियम

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की मांग - तत्काल हस्तक्षेप, वर्ना ओडिशा के सपने हवा में उड़ जाएंगे!

परिवहन विशेष न्यूज

भुवनेश्वर: ओडिशा की 'स्टील सिटी' व स्मार्ट सिटी राउरकेला में हवाई सेवा का सपना अब पूरी तरह से धराशायी होता नजर आ रहा है! एलायंस एयर ने राउरकेला से भुवनेश्वर और कोलकाता रूट की उड़ानें न केवल निलंबित कर दी हैं, बल्कि कर्मचारियों और फ्लाइट इंजीनियरों के तबादले से यह स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि सेवा हमेशा के लिए बंद हो सकती है। क्या यह भाजपा की 'डबल इंजन' सरकार का विकास मॉडल है, जहां केंद्र और राज्य दोनों भाजपा के हाथ में हैं, लेकिन ओडिशा की जनता को हवाई जहाज की बजाय 'बहाने' परोसे जा रहे हैं? एक तरफ प्रधानमंत्री 'उड़ान' योजना का प्रचार करते हैं, दूसरी तरफ राउरकेला एयरपोर्ट पर उड़ानें 'ग्राउंडेड' हो गईं - हाथ्यास्पद है कि सरकार के वादे हवा में उड़ते हैं, लेकिन विमान जमीन पर ही अटक रहे हैं! घटनाक्रम को तथ्यात्मक रूप से देखें तो



कहानी और भी दिलचस्प है। राउरकेला एयरपोर्ट, जो स्टील अर्थॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (SAIL) की संपत्ति है, को क्षेत्रीय कनेक्टिविटी स्कीम - उड़ान के तहत विकसित किया गया था। अप्रैल 2018 में एयरपोर्ट अर्थॉरिटी ऑफ इंडिया और स्टील अर्थॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड के बीच पहला एम ओ यु हस्ताक्षरित हुआ, जो तीन वर्ष का था और मार्च 2021 में समाप्त हुआ। इसके पश्चात, हॉकी वर्ल्ड कप 2023 की तैयारी में 28 अक्टूबर 2022 को नया ओ एन एम अनुबंध हुआ, जिसकी अवधि 27 अक्टूबर 2025 में समाप्त हो रही है। दिसंबर 2022 से एलायंस एयर ने राउरकेला-भुवनेश्वर और कोलकाता रूट पर उड़ानें शुरू कीं, लेकिन ये कभी नियमित नहीं रहीं। जुलाई 2025 से तो पूरी तरह बंद हो गईं - पहले 16 जुलाई से राउरकेला-भुवनेश्वर, फिर झारसुगुड़ा-भुवनेश्वर रूट 3 जुलाई से अक्टूबर 25 तक निलंबित, और अब कोलकाता-राउरकेला रूट भी 30 अक्टूबर तक कैसल। एलायंस एयर ने 80% फ्लीट को इंजन मुद्दों के कारण ग्राउंडेड कर दिया है, जिससे विमान



अनउपलब्धता का बहाना बनाकर उड़ानें रद्द की जा रही हैं। हाल ही में फ्लाइट इंजीनियर संजीव श्रीवास्तव को कोलकाता ट्रांसफर कर दिया गया, और अन्य कर्मचारियों को भी राउरकेला से हटाया जा रहा है - यह स्पष्ट संकेत है कि कंपनी सेवा बंद करने की तैयारी में है। यह स्थिति ओडिशा की भाजपा सरकार की विफलता का जीता-जागता प्रमाण है। केंद्रीय मंत्री और सांसद जुएल ओराम एंव पूर्व केंद्रीय

इसे 'ग्राउंडेड जीरो' ही बना दिया। राउरकेला, जो औद्योगिक केंद्र है, यहां उड़ानें बंद होने से व्यापार, पर्यटन और रोजगार पर गहरा असर पड़ेगा। यात्री महीनों से परेशान हैं - कभी विमान खराबी, कभी उपलब्धता न होने का बहाना। क्या यह 'आत्मनिर्भर भारत' है, जहां ओडिशा के लोग एक अदृढ़ एवं कार्यशील हवाई अड्डा व वहीं से सु संचालित हवाई यात्रा के लिए तरस रहे हैं। सरकार के 'उड़ान' वादे अब 'क्रेश' हो चुके हैं, और एम ओ यु की समर्पित के साथ एयरपोर्ट का भविष्य पूरी तरह अंधकार में है।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी इस मुद्दे पर सरकार को कड़ी निंदा करती है और मांग करती है कि ओडिशा सरकार तत्काल ए ए आई, सेल और एलायंस एयर के साथ नया समझौता करे, उड़ानें पुनः शुरू करे, तथा एयरपोर्ट का विस्तार सुनिश्चित करे। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी आम जनता व कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर सड़क पर उतरेगी और आंदोलन करेगी। ओडिशा की जनता को विकास के नाम पर छलना अब कतई बर्दाश्त नहीं - हम 'उड़ान' नहीं, सच्ची 'उन्नति' चाहते हैं!

## "टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है। A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुंचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुक्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर Ground-level food distribution, Getting children free education, हम मानते हैं - छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज बनें इस बदलाव की। Together, let's serve. Together, let's change. टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़ें।

www.tolwa.com/member.html स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं, वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत  
tolwaindia@gmail.com  
www.tolwa.com

**टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)**

**TOLWA**

website : [www.tolwa.in](http://www.tolwa.in)  
Email : [tolwadelhi@gmail.com](mailto:tolwadelhi@gmail.com)  
[bathiasanjaybathia@gmail.com](mailto:bathiasanjaybathia@gmail.com)

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम - डील - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए - 4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063  
कॉर्पोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली 110042





# शतरंज की बिसात पर गरिमा की हार विजय की उन्माद में हारा खेल का आदर्श

खेल की दुनिया में उत्साह और जोश का तालमेल दर्शकों के दिलों को हमेशा मोह लेता है। यह वह मंच है, जहां खिलाड़ी अपनी प्रतिभा, सम्पन्न और रणनीति से इतिहास रचते हैं। लेकिन जब यह जोश खेल भावना की पवित्र सीमाओं को लांघ जाता है, तो वह न केवल खेल की मर्यादा को आघात पहुंचाता है, बल्कि उसकी आत्मा को भी गहरी ठेस देता है। हाल ही में, शतरंज जैसे शांत और बौद्धिक खेल में एक ऐसी घटना ने विश्व भर के खेल प्रेमियों को स्तब्ध कर दिया, जिसने इसकी शालीन परंपरा को चुनौती दी। एक जापानी मूल के ग्रैंडमास्टर हिकारू नाकामुरा, जो विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज हैं, ने वर्ल्ड चैंपियन मुकेश के खिलाफ बुलेट राउंड में जीत हासिल करने के बाद उनके किंग को दर्शकों की ओर उछाल दिया। यह कृत्य न केवल अप्रत्याशित था, बल्कि शतरंज की उस गरिमामयी विरासत के विपरीत था, जो इसे सदियों से एक विशिष्ट स्थान देती आई है। यह घटना खेल की बदलती भावना का प्रतीक बन गई, जहां जीत का उत्सव अब सम्मान की बजाय तमाशे की ओर बढ़ रहा है।

शतरंज, जिसे बुद्धि, धैर्य और शिष्टाचार का प्रतीक माना जाता है, एक ऐसा खेल है जहां खिलाड़ी अपनी चालों से नहीं, बल्कि अपने मस्तिष्क को गहराइयों से एक-दूसरे को चुनौती देते हैं। यह वह मंच है, जहां हर चाल एक कहानी बयान करती है और हर जीत सम्मान का प्रतीक होती है। लेकिन हाल ही में अमेरिका और भारत के बीच आयोजित एक प्रदर्शनी मैच में, इस खेल की शालीनता को ठेस पहुंची। जापानी ग्रैंडमास्टर ने बुलेट राउंड में वर्ल्ड चैंपियन को चेकमेट करने के बाद उनके किंग को दर्शकों की ओर फेंककर एक ऐसी परंपरा को तोड़ा, जो शतरंज को अन्य खेलों से अलग बनाती है। यह कृत्य महज एक उत्सव नहीं था, बल्कि एक ऐसी हरकत थी, जिसने शतरंज की आत्मा पर सवाल उठाए।

यह घटना उस बदलती मानसिकता का दर्पण



है, जो आधुनिक खेलों में तेजी से उभर रही है। पहले, हार-जीत को शालीनता से स्वीकार करना एक खिलाड़ी की पहचान थी। लेकिन आज, जीत का जश्न तमाशे और विवादा का रूप ले रहा है। कुछ समय पहले क्रिकेट के मैदान पर भी ऐसी ही एक घटना ने सुर्खियां बटोरीं, जब पाकिस्तानी टीम के खिलाड़ियों ने इशारेबाजी के जरिए जश्न मनाया, जिसकी व्यापक आलोचना हुई। अब शतरंज जैसे शांत खेल में इस तरह की हरकत ने एक गंभीर सवाल खड़ा किया है: क्या खेल की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ऐसी हरकतें अपरिहार्य हैं? क्या जीत का उत्सव अब विपक्षी खिलाड़ी का अपमान करने का पर्याय बन गया है?

इस प्रदर्शनी मैच में दोनों खिलाड़ियों ने 10 मिनट और 5 मिनट के राउंड में शानदार प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप बाजी डौल रही। यह रोमांचक दर्शकों के उत्साह को चरम पर ले गया। लेकिन बुलेट राउंड में, जापानी ग्रैंडमास्टर हिकारू नाकामुरा ने न केवल वर्ल्ड चैंपियन को हराया, बल्कि उनके किंग को दर्शकों की ओर फेंककर अपनी जीत का जश्न एक अभूतपूर्व अंदाज में मनाया। भले ही कुछ दर्शकों ने इसे

रोमांचक माना, लेकिन अधिकांश ने इसे खेल की मर्यादा के खिलाफ ठहराया। स्वयं ग्रैंडमास्टर ने अपनी इस हरकत पर कोई प्रस्ताव नहीं जताया। उन्होंने कहा कि किंग को फेंकना उनकी जीत का अंदाज है। लेकिन यह व्यवहार न केवल विपक्षी खिलाड़ी का अपमान करता है, बल्कि उस खेल की परंपरा को भी आघात पहुंचाता है, जो सम्मान और शालीनता का प्रतीक है। खेल भावना का सच्चा अर्थ केवल जीत या हार तक सीमित नहीं है। यह विपक्षी खिलाड़ी के प्रति सम्मान, खेल की मर्यादा को बनाए रखने और अपनी भावनाओं पर नियंत्रण में निहित है। शतरंज जैसे खेल, जो बौद्धिक कौशल के साथ-साथ व्यवहार में गरिमा की अपेक्षा करते हैं, ऐसी घटनाएं उनकी छवि को धूमिल करती हैं। यह घटना भले ही एक प्रदर्शनी मैच का हिस्सा थी, लेकिन इसने शतरंज की उस शांत और बौद्धिक छवि को ठेस पहुंचाई, जो इसे अन्य खेलों से विशिष्ट बनाती है।

यह घटना हमें यह चिंतन करने पर विवश करती है कि खेल की लोकप्रियता और उसकी मर्यादा के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जाए। क्या विवाद और तमाशा खेल को और आकर्षक

बनाते हैं, या यह उसकी आत्मा को कमजोर करते हैं? शतरंज में हर चाल एक कहानी कहती है, और खिलाड़ियों का दायित्व है कि उनकी हरकतें इस कहानी की गरिमा को बनाए रखें। खेल तो शतरंज जैसे खेल अपनी अनूठी पहचान खो सकते हैं। खिलाड़ियों को यह समझना होगा कि उनकी हरकतें न केवल उनकी व्यक्तिगत छवि को प्रभावित करती हैं, बल्कि उस खेल की साख को भी दांव पर लगाती हैं, जिसे वे जीते हैं। शतरंज को उसकी शालीनता और सम्मान के साथ बनाए रखना प्रत्येक खिलाड़ी की जिम्मेदारी है। यह समय है कि हम खेल की उस आत्मा को पुनर्जनन दें, जो सम्मान, अनुशासन और गरिमा का प्रतीक है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

## मिशन शक्ति फेज- 5 के तहत कक्षा 9 की छात्रा सोनम को बिनावर थाने का 1 दिन का थाना अध्यक्ष नियुक्त किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

**बिनावर:** सरकार द्वारा चलाए जा रही हैं मिशन शक्ति फेज 5 के तहत राजकीय हाई स्कूल खूनक बदायूं की छात्रा सोनम पुत्री मुनंद पाल निवासी खूनक जिला बदायूं को 1 दिन का बिनावर थाने का थाना अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस दौरान थाना बिनावर पर 10 से अधिक फरिय्यादीयों की समस्या सुनी और संबंधित हल्का इंचार्ज व वीट आरक्षियों को तुरंत निस्तारण के लिए भेजा गया। इसी क्रम में बिनावर थाना अध्यक्ष सोनम ने महिला हेड कॉस्टेबल सोनिका सिंह व रुचि मिश्रा

से जानकारी ली कि सरकार द्वारा चलाई जा रही मिशन शक्ति फेज- 5 के तहत क्या-क्या अभियान चल रहे हैं। इस मौके पर कार्यकर्मा बिनावर थाना अध्यक्ष राजेंद्र सिंह ने 1 दिन की बिनावर थाना अध्यक्ष सोनम छात्रा को बुके भेंट कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर उप निरीक्षक शेरपाल सिंह, उप निरीक्षक आदर्श तिवारी, कंप्यूटर ऑपरेटर शुभ नीत शाक्य, कंप्यूटर ऑपरेटर फहीम, हेड कॉस्टेबल सोनिका सिंह, हेड कॉस्टेबल रुचि मिश्रा, हेड मोहरम मनोज कुमार सहित आदि पुलिस स्टाफ मौजूद रहा।



## नोबेल पुरस्कार सप्ताह 6 से 13 अक्टूबर 2025 - पुरे विश्व की नजरें नोबेल शांति पुरस्कार पर-क्या ट्रम्प को झटका लगने की संभावना? एक अंतरराष्ट्रीय विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य

डोनाल्ड ट्रंप को 2025 का शांति पुरस्कार मिलने की संभावना नहीं, 2026 के लिए कठोर शांति श्रम करना होगा- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर सबसे प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कारों की घोषणा हर वर्ष की तरह, 2025 में भी 6 से 13 अक्टूबर तक के "नोबेल सप्ताह" में की जा रही है जिस पर पूरे विश्व की नजरें लगी हुई हैं विशेष रूप से नोबेल शांति पुरस्कार पर। चिकित्सा से शुरुआत, फिर भौतिकी, रसायन, साहित्य, शांति और अन्त में अर्थशास्त्र, सोमवार, 6 अक्टूबर 2025, चिकित्सा की घोषणा हुई नोबेल समिति द्वारा नोबेल चिकित्सा या जीवविज्ञान पुरस्कार की घोषणा की गई। घोषणा आमतौर पर स्टॉकहोम में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में होती है, और लाइव प्रसारण किया जाता है। यह पहला दिन होने के कारण वैज्ञानिक और स्वास्थ्य जगत में उच्च उत्सुकता होती है, और यह नोबेल सप्ताह की शुरुआत का संकेत देता है। दूसरे दिन मंगलवार 7 अक्टूबर 2025 भौतिकी पुरस्कार की घोषणा हुई है। यह परम्परा है कि भौतिकी पुरस्कार सप्ताह के दूसरे दिन घोषित किया जाए। बुधवार, 8 अक्टूबर 2025- रसायन पुरस्कार, 9 अक्टूबर 2025, साहित्य पुरस्कार की घोषणा होती है। साहित्य जगत, लेखकों, कवियों, आलोचकों एवं साहित्य-प्रेमियों के लिए यह एक उत्सव का दिन होता है। विजेता लेखक की पिछली कृतियाँ, विषय, उनकी वैश्विक प्रभाव और भाषा-संघर्ष चर्चित होते हैं। आमतौर पर, विजेता पहले से अज्ञात होते हैं, यानी लेखक को अचानक इस खबर की अभिभूत कर देने वाली घोषणा सुननी होती है। मीडिया एवं साहित्यकार तुरंत प्रतिक्रियाएँ देते हैं, "क्या यह सही चयन है?" "इसका साहित्य जगत पर क्या असर होगा?" "इसके बाद लेखक की प्रसिद्धि और उनकी पुस्तकें किन भाषाओं में अनुवाद होंगी?" आदि सवाल उठते हैं। शुकवार, 10 अक्टूबर 2025 शांति पुरस्कार की घोषणा, यह पुरस्कार नोर्वेजियन नोबेल समिति द्वारा सौंपा जाता है, जो नोर्वे की संसद द्वारा नामित सदस्यों से मिलकर बनती है। इस दिन पूरी दुनिया की निगाहें तनावपूर्ण होती हैं, क्योंकि शांति पुरस्कार का राजनीतिक और सामाजिक महत्व बहुत अधिक होता है। विजेता या विजेताओं की

घोषणा होते ही वैश्विक मीडिया, सरकारें, सामाजिक-न्याय और मानवाधिकार संगठन अपनी प्रतिक्रियाएँ देते हैं। पुरस्कार विजेता को शांति-संबंधी योगदानों के आधार पर आलोचना या समर्थन मिलता है। कई बार इस दिन ही यह विवाद उत्पन्न होता है कि क्या चयन न्यायसंगत है, क्या विजेता ने वास्तव में शांति लाने में योगदान दिया है, आदि। बाद में (दिसंबर में) विजेता को ओस्लो में शांति पुरस्कार समारोह और संबद्ध कार्यक्रम (जैसे संवाद, व्याख्यान) आयोजित होते हैं। एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र मानता हैं कि, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को कई दिनों से शांति पुरस्कार मिलने की संभावना है चल रही है जबकि वे खुद कबूल कर चुके हैं कि उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार नहीं दिया जाएगा, वैसे भी कई नॉर्मिनेशन सिफारिशें अंतिम तारीख निकालने के बाद गए हैं, वैसे भी मीडिया के अनुसार वे एक विवादास्पद, चिर विवादित और प्रभावशाली राजनीतिक व्यक्तित्व हैं, लंबे समय से नोबेल शांति पुरस्कार को प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं, या कम-से-कम इसके लिए नामित होना चाहते हैं। इस खंड में मैं उनके उस सपने की सम्भाव्यता, उसकी रणनीति, चुनौतियाँ और समाज-राजनीति में इसके असर को समझने की कोशिश करूँगा। सोमवार, 13 अक्टूबर 2025, अर्थशास्त्र पुरस्कार की घोषणा, विजेताओं को इस घोषणा के बाद दिसंबर में स्टॉकहोम में पुरस्कार ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया जाएगा। इस दिन के बाद नोबेल सप्ताह की घोषणाएँ समाप्त होती हैं और अगले महीनों में पुरस्कार वितरण, संवाद एवं समारोहों की व्यवस्था होती है। नोबेल पुरस्कार वितरण समारोह 10 दिसंबर को होता है, यह दिन अल्फ्रेड नोबेल के निधन की वर्षगांठ है। शांति पुरस्कार विजेता के लिए यह समारोह ओस्लो, नॉर्वे में आयोजित होता है, जबकि अन्य पुरस्कारों (चिकित्सा, भौतिकी, रसायन, साहित्य, अर्थशास्त्र) का समारोह स्टॉकहोम, स्वीडन में होता है। विजेता को सोने की पदक, प्रमाणपत्र, और निधि राशि दी जाती है। पुरस्कार राशि समय-समय पर परिवर्तित होती है।

साथियों बात अगर हम पूरे विश्व की जिस पुरस्कार पर नजरें लगी हुई हैं, नोबेल शांति पुरस्कार: क्या ट्रम्प को मिलने की संभावना? इसको समझने की करें तो, नोबेल शांति पुरस्कार

दुनियाँ भर में राजनीति, मानवाधिकार और संघर्ष-समाधान की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील और विवादास्पद माना जाता है। जब किसी सक्रिय राजनीतिक नेता (जैसे कि ट्रम्प) को इसके लिए प्रस्तावित या संभावित रूप से विजेता माना जाता है, तो उसके प्रति विश्व की निगाहें तीव्र हो जाती हैं, आलोचना, समर्थन और राजनीतिक-रणनीति सभी एकसाथ होती हैं। साथियों बात अगर हम ट्रम्प को नोबेल शांति पुरस्कार मिलने की संभावनाएँ अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ की करें तो समर्थक तर्क- (1) मध्यस्थता और संघर्ष समाधान-ट्रम्प समर्थकों का तर्क है कि उन्होंने मध्य पूर्व, भारत-पाकिस्तान, इजरायल-इरान, और अन्य क्षेत्रों में कुछ कूटनीतिक एवं मध्यस्थता पहल की हैं, जो उन्हें शांति-निर्माता के रूप में पेश करती हैं। उदाहरण के लिए, पाकिस्तानी सरकार ने ट्रम्प को भारत-पाकिस्तान संघर्ष में हस्तक्षेप करने और शांति प्रस्तावित करने के आधार पर नामांकित करने की बात कही है। इसके अतिरिक्त, मध्य पूर्व में ट्रम्प की भूमिका और एब्राहम समझौते आदि कूटनीतिक पहलें समर्थकों द्वारा उलगुलाही जाती हैं। (2) नामांकन और सट्टेबाजी बाजार संकेत-ट्रम्प को पहले भी नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया है (2018, 2020, 2021) 2025 के लिए सट्टेबाजियों में ट्रम्प को विजेताओं की सूची में माना गया है, उदाहरण के लिए, कुछ बाजारों में उनकी संभावना लगभग 13.3 पैसेट बताई गई है। इस तरह की बाजार-संकेत आलोचकों और समर्थकों दोनों के लिए दिलचस्प विषय होते हैं। (3) राजनीति और प्रतिष्ठा-ट्रम्प एक बहुत प्रभावशाली वैश्विक नेता हैं। यदि उन्हें शांति पुरस्कार मिले, तो यह उनके राजनीतिक प्रतिष्ठा को और मजबूत करेगा। वे स्वयं भी अवसर इस पुरस्कार की ओर आकर्षित प्रतीत होते हैं- मीडिया में उनके टिप्पणियाँ और दावे देखने को मिलते हैं। उनका मानना है कि उनके अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को अभी तक न्याय नहीं मिला है। बाधाएँ और प्रतिकूल कारक:- (1) समय-प्राधिकरण एवं मूल्यांकन अपेक्षाएँ-नोबेल शांति पुरस्कार बहुत ही जटिल मूल्यांकन प्रक्रिया से गुजरता है, और अक्सर विजेताओं को उस संघर्ष में सफल परिणाम दिखाने होते हैं। सिर्फ दावे या घोषणाएँ पर्याप्त नहीं होती। यदि कोई राजनीतिक नेता अभी भी अपने कार्यकाल में हो और विवाद या संघर्ष की स्थिति में हो, तो उसके लिए "शांति

निर्माण" को सिद्ध करना आसान नहीं है। ट्रम्प के कई नीतिगत और राजनीतिक निर्णय विवादास्पद रहे हैं, और विरोधी उनकी नीतियों को आलोचना करते हैं, यह नोबेल समिति पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। (2) नॉर्वेजियन नोबेल समिति की निष्पक्षता एवं विवाद-नोबेल शांति पुरस्कार की निर्णय प्रक्रिया नॉर्वे की सामाजिक, राजनीतिक व नैतिक चुनौतियों से प्रभावित हो सकती है। ट्रम्प जैसे व्यक्ति को पुरस्कार देना समिति के लिए विवादास्पद हो सकता है, आलोचनाएँ होंगी कि क्या यह चयन मानदंडों पर खरा उतरता है? इस तरह की आलोचनाएँ पहले भी अन्य राजनीतिक नेताओं को दिए गए शांति पुरस्कारों के बाद हुई हैं। (3) लोकप्रिय मत और वैयक्तिक छवि-अमेरिकी जनता तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में ट्रम्प के प्रति विचार मिश्रित हैं। एक हालिया मीडिया में आई पोल में 76 पैसेट अमेरिकियों ने कहा कि ट्रम्प को नोबेल शांति पुरस्कार नहीं चाहिए। इसके अलावा, नोबेल समिति ज्यादातर उनके कार्यों और स्थिर शांति योगदानों को देखेगी, यदि कई विवादों या आलोचनाओं के कारण उनका छवि नकारात्मक रहे, तो यह उनकी संभावना को कमजोर कर सकता है। (4) समय और उपलब्धता-कई नामांकन ट्रम्प के लिए देर हो चुके हैं जैसे कि 2025 के लिए नामांकन की अखिरी तारीख के बाद प्राप्त नामांकन अगले वर्ष के लिए विचार की जाएंगी। इस प्रकार, कुछ दावों और मध्यस्थता प्रयासों को तत्काल प्रभाव दिखाना मुश्किल हो सकता है।

अतः अगर हम उपयोग पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि क्या वास्तविक संभावना:- ट्रम्प को नोबेल शांति पुरस्कार मिलने की संभावना न तो शून्य है और न ही असीम। यदि वह विश्व स्तर पर शांति-निर्माण और संघर्ष-समाधान की ऐसी परियोजनाओं में सहभागी रहे हैं जिनका मापनीय सकारात्मक परिणाम हो, और यदि समिति उन्हें इस दिशा में देखे, तो यह संभव हो सकता है, लेकिन इसे बहुत चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। मीडिया संकेत- नामांकन, मीडिया चर्चा और सट्टेबाजी संकेत, ये दिखाते हैं कि ट्रम्प को इस वर्ष के शांति पुरस्कार विजेताओं की सूची में गंभीर दावेदार नहीं माना जा रहा है। पुरस्कार समिति की गुप्त प्रक्रिया, राजनीतिक विमर्श, आलोचनाएँ और मूल्यांकन मानदंड इसे आसान नहीं बनने देगी।

## प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी बने कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद् (पंजी.) दिल्ली के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष



परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन। कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद् (पंजी.) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक परिषद् के रोहिणी (दिल्ली) स्थित प्रधान कार्यालय में सम्पन्न हुई जिसमें कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद् मुकेश पटेल के द्वारा प्रख्यात साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। साथ ही उनसे लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण की विश्वव्यापी लीलाओं व गाथाओं के संकलन एवं विश्वभर में प्रचार-प्रसार के लिए सहयोग व मार्ग दर्शन प्रदान करने की कामना की गई है।

ज्ञात हो कि प्रख्यात साहित्यकार, अध्यात्मविद्, समाजसेवी एवं पत्रकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट पिछले 50 वर्षों से हिन्दी साहित्य एवं ब्रज

संस्कृति के संरक्षण व उन्नयन के लिए लेखन कर रहे हैं। इसके अलावा हाल ही में उनको गोमती नगर (लखनऊ) स्थित सीएमएस ऑडिटोरियम में उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व उपा-मुख्यमंत्री व राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा के द्वारा "यूपी रत्न" सम्मान प्रदान किया गया है। उनको समूचे देश की विभिन्न संस्थाओं और संगठनों द्वारा अभी तक 200 से भी अधिक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। वे महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज द्वारा स्थापित मासिक पत्रिका "श्रीकृष्ण कृपा संजीवनी" के संपादक हैं।

पूर्व में वे वृन्दावन शोध संस्थान में ब्रज संस्कृति विश्व कोश परियोजना में सह संपादक के पद पर कार्य कर चुके हैं। इसके अलावा उनके द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में कार्य किया जा चुका है।

## दिल्ली में "नेस्टफेस्ट 2025" में प्रबल प्रताप सिंह जुदेव को मिला राष्ट्रीय सम्मान सुनील विचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। माई होम इंडिया द्वारा तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित आठवें नार्थ ईस्ट स्टूडेंट्स फेस्टिवल (NestFest 2025) भव्य और ऐतिहासिक रूप से आयोजित हुआ। "संस्कृति से जलवायु तक: युवा जनादेश" थीम पर आधारित इस आयोजन में पूर्वोत्तर भारत की विविधता, संस्कृति और परंपराओं का जीवंत प्रदर्शन हुआ।

कार्यक्रम में मिजोरम के राज्यपाल एवं पूर्व सेना प्रमुख जनरल वी. के. सिंह और दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के कर कमलों से भाजपा छत्तीसगढ़ प्रदेश उपाध्यक्ष एवं घर वापसी प्रमुख प्रबल प्रताप सिंह जुदेव को समाज एवं राष्ट्र निर्माण में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता सुनील देवधर, देशभर से आए केंद्रीय मंत्रीगण, शिक्षाविद, सामाजिक कार्यकर्ता एवं मीडिया जगत के प्रमुख हस्तियों की उपस्थिति रही। मंच पर उत्तर-पूर्व के छात्र-छात्राओं ने आकर्षक

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से भारत की एकता और अखंडता की झलक पेश की।

सम्मान प्राप्त करने के बाद प्रबल प्रताप सिंह जुदेव ने कहा— "यह सम्मान मेरा व्यक्तित्व नहीं, बल्कि उन सभी कार्यकर्ताओं और समाजबंधुओं का है जो घर वापसी अभियान में मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं। यह सम्मान जनजातीय समाज की अपनी जड़ों की ओर लौटने की आस्था का प्रतीक है।"

उन्होंने आगे कहा कि "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में उत्तर-पूर्व आज नई ऊर्जा, विश्वास और विकास का प्रतीक बन चुका है।" प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों को "अष्ट लक्ष्मी" कहे जाने का उल्लेख करते हुए जुदेव जी ने कहा कि यह क्षेत्र भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और आर्थिक विविधता का उज्वल उदाहरण है।

माई होम इंडिया के इस आठवें सम्मेलन में संस्था द्वारा उत्तर-पूर्व के युवाओं के सशक्तिकरण हेतु किए जा रहे कार्यों की सराहना की गई। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र एकता के संदेश और सांस्कृतिक एकजुटता के आह्वान के साथ हुआ।

## नवनिर्मित मणिद्वीप भागवत सेवा आश्रम के सप्त दिवसीय उदघाटन समारोह में हुआ संत-विद्वत् सम्मेलन का आयोजन



(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। चैतन्य विहार फेस-2 स्थित नवनिर्मित मणिद्वीप भागवत सेवा आश्रम में चल रहे सप्त दिवसीय उदघाटन समारोह के अंतर्गत शरद पूर्णिमा के पावन पर्व पर वृहद सप्त-विद्वत् सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रीनाभापीठाधीश्वर जागदू स्वामी सुतीक्ष्णदास देवाचार्य महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा का पर्व अत्यंत दिव्य है। आज इस पावन पर्व पर र्भागवत भक्तर आचार्य प्रदीप मणि महाराज द्वारा संस्थापित मणिद्वीप भागवत सेवा आश्रम का उदघाटन होना बड़े ही हर्ष का विषय है।

श्रीमज्जगद्गुरु स्वामी जयराम दास महाराज ने कहा कि आचार्य प्रदीप मणि महाराज ने बहुत ही कम आयु में ही श्रीमद्भागवत कथा, श्रीराम कथा एवं अन्य धर्मग्रंथों के माध्यम से देश ही नहीं अपितु विदेशों में प्रभु भक्ति का प्रचार-प्रसार कर असंख्य व्यक्तियों को धर्म के मार्ग से जोड़कर उनका कल्याण किया है।

श्रीपीठाधीश्वर जागदू बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज ने कहा कि आचार्य प्रदीप मणि महाराज अत्यंत उदार, परोपकारी व सेवाभावी हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि उनके निदेशन में मणिद्वीप भागवत सेवा आश्रम गौ सेवा, सन्त सेवा, ब्रजवासी सेवा एवं दीन-दुखियों की सेवा के लिए सदैव समर्पित रहेगा।

श्रीमज्जगद्गुरु स्वामी विश्वेशप्रणनाचार्य महाराज ने कहा कि वर्तमान में सनातन धर्म पर हो रहे कुठाराघात से धर्म की रक्षा के लिए ऐसे आश्रमों की स्थापना होना अति आवश्यक है। क्वीको देश व धर्म की रक्षा के लिए उसकी संस्कृति की रक्षा करना परम-आवश्यक है। तभी धर्म व देश सुरक्षित और उत्तम बानेगा।

सन्त-विद्वत् सम्मेलन में जागदू रामानुजाचार्य स्वामी श्रीअनन्ताचार्य महाराज, महागण्डलेश्वर श्रीरुण्डीस्वामी रामदेवानंद सरस्वती महाराज, भागवत भास्कर कृष्ण चंद्र ठाकुरजी

महाराज, डॉ. अनिरुद्धाचार्य महाराज, आचार्य/भागवत पीठाधीश्वर मारुति नंदनाचार्य वागीश महाराज, विश्वविख्यात भागवताचार्य डॉ. चतुरनारायण पाराशर, पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शर्मा, धर्मरत्न स्वामी बलरामाचार्य महाराज, आचार्य रामविलास चतुर्वेदी, डॉ. अशोक शास्त्री, सन्त श्रीदामकिंकर महाराज, श्रीरामकथा मर्मज्ञ अशोक व्यास महाराज, रघूपी रत्नर की उर्माधसे अलंकृत प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, भागवताचार्य विपिन बापू, आचार्य धनश्याम दुबे, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य गुगल किशोर कटार, रासाचार्य स्वामी राम शरण शर्मा, आचार्य बुद्धिप्रकाश शास्त्री, धर्मवीर शास्त्री, प्रेम शरण शर्मा, आचार्य नरोत्तम शास्त्री, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, प्रोफेसर रश्मीकांत, डॉ. कौशल किशोर, पंडित श्याम सुंदर ब्रजवासी, सुमंत कृष्ण महाराज, भक्तिमती बीना माताजी (दिल्ली) आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. आचार्य ऋषिकुमार तिवारी ने किया।

मणिद्वीप भागवत सेवा आश्रम के संस्थापक र्भागवत भक्तर आचार्य प्रदीप मणि महाराज ने महोदयों में पधार्य समस्त सत्सत्तों विद्वानों का उत्तरीय ओढ़ाकर व ठाकुरजी का चित्रपट, पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट कर स्वागत किया। तत्पश्चात् सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृद्ध भंडारा हुआ।

# “एक वर्दी का मौन: हरियाणा के एडीजीपी वाई. एस. पूरन की आत्महत्या और हमारी सामूहिक असफलता”

(पद और प्रतिष्ठा के पीछे छिपी पीड़ा का मौन विस्फोट — हरियाणा के एडीजीपी वाई. एस. पूरन की आत्महत्या समाज के संवेदनहीन होते ढांचे पर गहरा सवाल उठाती है।) पूरन कुमार की आत्महत्या केवल एक व्यक्ति की त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे प्रशासनिक और सामाजिक ढांचे की विफलता का प्रतीक है। मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान न देना, लगातार दबाव और अकेलापन, संवेदनशील अधिकारियों को भीतर से तोड़ देता है। हमें अपने प्रशासनिक तंत्र में नियमित काउंसलिंग, गोपनीय सहायता और संवाद की व्यवस्था करनी होगी। समाज और मीडिया को भी संवेदनशील होना चाहिए, सनसनीखेजी की बजाय सहानुभूति और सुधार पर ध्यान देना चाहिए। केवल इसी तरह हम भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोक सकते हैं और अपने अधिकारियों को उनका सम्मान और सुरक्षा दिला सकते हैं।

## डॉ. प्रियंका सौरभ

कभी-कभी किसी घटना की खबर केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती, बल्कि वह पूरे समाज के भीतर छिपे हुए असंतुलन, दबाव और संवेदनहीनता का दर्पण बन जाती है। हरियाणा के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक वाई पूरन कुमार की आत्महत्या ऐसी ही एक घटना है — जो केवल पुलिस विभाग की त्रासदी नहीं, बल्कि उस मानसिक, प्रशासनिक और सामाजिक ढांचे की विफलता का प्रतीक है, जिसमें पद और प्रतिष्ठा के बावजूद ईमान अकेला और असहाय महसूस करने लगता है।

पूरन कुमार का शव चंडीगढ़ स्थित उनके घर के तहखाने में मिला, जहाँ बताया गया कि वह

कमरा पूरी तरह ध्वनि-रोधक था। उनके पास से सरकारी पिस्तौल बरामद हुई। उनकी पत्नी अमनीत कौर एक भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी हैं, जो उस समय जापान में थीं। कोई आत्महत्या-पत्र नहीं मिला। यह सब कुछ इतना अचानक हुआ कि पूरा प्रश्न और प्रशासनिक तंत्र स्तब्ध रह गया। जब कोई पुलिस अधिकारी आत्महत्या करता है, समाज का पहला सवाल होता है — “इतने ऊंचे पद पर था, उसे क्या कमी थी?” यही सवाल हमारी सबसे बड़ी भूल है। हम यह भूल जाते हैं कि पद, पैसा या अधिकार कभी भी मन की शांति की गारंटी नहीं देते।

प्रत्येक अधिकारी, चाहे वह किसी भी सेवा में हो, सबसे पहले एक मनुष्य होता है। दिन-रात का तनाव, फाइलों के ढेर, राजनीतिक दबाव, निरंतर आलोचना, और एक ऐसे तंत्र की घुटन जिसमें ईमानदारी को अक्सर कमजोरी समझा जाता है — ये सब किसी भी व्यक्ति को भीतर से तोड़ सकते हैं। पूरन कुमार के मामले में कहा जा रहा है कि वे हाल के दिनों में पदोन्नति नीति और वरिष्ठ अधिकारियों के व्यवहार से असंतुष्ट थे। लेकिन क्या इन कारणों से जीवन समाप्त करना उचित था? नहीं। पर यह भी सच है कि जब कोई व्यवस्था भीतर से सड़ जाती है, तो उसमें संवेदनशील और आत्मसम्मानी व्यक्ति सबसे पहले टूटते हैं।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य को आज भी कमजोरी के रूप में देखा जाता है। “मैं थक गया है” या “मुझे किसी से बात करनी है” जैसे वाक्य कहने में भी लोग डरते हैं कि कहीं उनकी योग्यता या क्षमता पर प्रश्न न उठ जाए। पुलिस बलों में यह स्थिति और भी गंभीर है। लंबे कार्य घंटे, पारिवारिक जीवन में कमी, जनता और राजनीतिक दबाव, भ्रष्टाचार से झूझना, और ऊँचे अधिकारियों की मनमानी — ये सब मिलकर मानसिक थकान को बढ़ाते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि हर वर्ष सैकड़ों पुलिसकर्मी आत्महत्या



करते हैं, लेकिन शायद ही किसी ने यह गंभीरता से पूछा कि क्यों। उनके लिए न तो परामर्श प्रणाली है, न मनोवैज्ञानिक सहायता, न ही सहानुभूति। पूरन कुमार की घटना भी इसी मौन अवसाद का परिणाम प्रतीत होती है।

जब यह खबर सामने आई कि “एडीजीपी ने खुद को गोली मारी”, तो सोशल मीडिया पर तरह-तरह की टिप्पणियाँ आने लगीं — “भ्रष्टाचार होगा”, “पारिवारिक विवाद रहा होगा”, “कोई साजिश होगी।” यही हमारी सामाजिक बीमारी है — हम संवेदन से पहले संदेह खोजते हैं। कोई यह नहीं पूछता कि वह व्यक्ति अपने भीतर क्या झेल रहा था। कोई नहीं सोचता कि उसकी पत्नी, उसके बच्चे और उसके सहकर्मी किस पीड़ा से गुजर रहे होंगे। हम केवल सुर्खियाँ बनाते हैं, क्योंकि हमारे

लिए अब मनुष्य नहीं, केवल समाचार बचा है।

एक अधिकारी, जिसने अपना पूरा जीवन कानून और जनता की सेवा में लगाया, अगर उसी व्यवस्था से हारकर जीवन त्याग देता है, तो यह केवल उसकी नहीं बल्कि पूरे तंत्र की आत्महत्या है। यह असफलता उस व्यवस्था की है जो अपने लोगों को भावनात्मक सहारा नहीं दे पाती। यह विफलता उस समाज की है जो केवल सफलता की दौड़ में भागता है, पर सहानुभूति और संतुलन को भूल गया है। और यह शर्म उस मीडिया की है जो किसी की मृत्यु में भी आकर्षण और टीआरपी खोज लेती है। पूरन कुमार की मौत हमसे यह सवाल पूछती है — “क्या इस देश में किसी अधिकारी को ईमानदार, असहमति रखने वाला और संवेदनशील रहकर भी जीने दिया जाएगा?”

देश में प्रशासनिक अधिकारियों पर राजनीतिक दबाव कोई नई बात नहीं है। फाइलों, तबादलों, पदोन्नतियों और जांचों का जाल इस कदर फैल गया है कि सच्चा और स्पष्ट बोलने वाला व्यक्ति हमेशा अकेला पड़ जाता है। पूरन कुमार जैसे अधिकारी, जिनकी पहचान स्पष्टवादिता से थी, अक्सर इसी जाल में फँस जाते हैं। वे न तो शुक पाते हैं, न ही समर्थन पा पाते हैं। परिणामस्वरूप भीतर का अकेलापन उन्हें धीरे-धीरे तोड़ देता है। वर्दी बाहर से चमकती है, पर अंदर का मन बुझ जाता है।

अगर हम सचमुच इस घटना से कुछ सीखना चाहते हैं, तो तीन मोर्चों पर काम करना होगा। पहला, मानसिक स्वास्थ्य को संस्थागत व्यवस्था का हिस्सा बनाना होगा। हर राज्य में पुलिस और

प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारियों के लिए नियमित परामर्श, तनाव प्रबंधन कार्यशालाएँ और गोपनीय सहायता केंद्र होने चाहिए। दूसरा, संवाद और मानवता का वातावरण बनाना होगा। वरिष्ठ अधिकारी अपने अधीनस्थों से केवल आदेश नहीं, बल्कि सहानुभूति भी साझा करें। “आप कैसे हैं?” जैसे कुछ शब्द कई बार जीवन बचा सकते हैं। और तीसरा, मीडिया को अपनी भूमिका जिम्मेदारी से निभानी होगी। किसी आत्महत्या की खबर को सनसनीखेज बनाना न केवल संवेदनशील है बल्कि यह समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। समाचारों का उद्देश्य सुधार और समझ होना चाहिए, न कि मनोरंजन।

पूरन कुमार का शव जिस ध्वनि-रोधक कक्ष में मिला, वह केवल एक भौतिक स्थान नहीं बल्कि पूरे तंत्र की स्थिति का प्रतीक है। एक ऐसा कक्ष, जहाँ बाहर की कोई आवाज नहीं पहुँचती और भीतर की कोई पुकार बाहर नहीं आती। यह तहखाना हमारे प्रशासनिक ढाँचे का प्रतीक बन गया है — ऊपर से चमकदार, भीतर से मौन और घुटनभरा।

पूरन कुमार का जाना केवल एक परिवार का नहीं, बल्कि पूरे समाज का नुकसान है। यह चेतावनी है कि अगर हमने मानसिक स्वास्थ्य, संवेदनशील नेतृत्व और संवाद को प्राथमिकता नहीं दी, तो आने वाले समय में ऐसी घटनाएँ और बढ़ेंगी। अब यह स्वीकार करना ही होगा कि मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक सहयोग किसी भी आधुनिक शासन की उतनी ही आवश्यकता है, जितना अनुशासन और उत्तरदायित्व। एक संवेदनशील व्यवस्था ही एक सुरक्षित समाज की नींव रख सकती है।

पूरन कुमार की आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके मौन से सबक लें और भविष्य में किसी भी वर्दीधारी को इतना अकेला न होने दें कि वह अपनी ही आवाज को बन्दूक से सदा के लिए मौन कर दे।

## चिंतन-जूता प्रकरण : जो हुआ वो गलत हुआ, पर हुआ ही क्यों? इस पर भी चिंतन जरूरी!

सुशील कुमार 'नवीन'

सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को जो हुआ, वह पूर्णतः गलत हुआ। ऐसा नहीं होना चाहिए था। लोकतांत्रिक देश में विरोध के तरीके और भी बहुत हैं। देश की सर्वोच्च न्याय संस्था के मुखिया के साथ इस तरह की हरकत सौंभे-सौंभे न्याय प्रक्रिया पर हमला है। सीजेआई ने भी उदार हृदय दिखाकर नया उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो निसंदेह न्यायिक अधिकारी के सरल स्वभाव की नई नजिर बनेगा। निसंदेह इस तरह की घटना नहीं होनी चाहिए, पर अब जब हो ही गई तो अब इस पर भी चिंतन जरूरी है।

न्यायालय देश के प्रत्येक उस व्यक्ति की सबसे बड़ी उम्मीद है जो हर तरह की व्यवस्था से आहत है। जब कोई सुनवाई नहीं हो रही हो। न प्रशासन सुन रहा हो और न सरकार। तब उम्मीद की एकमात्र रोशनी की किरण यहीं से प्राप्त होने की होती है। न्यायालय द्वारा कहा गया हर एक शब्द पत्थर की लकड़ी हो जाता है। हर एक शब्द अक्षय बन जाता है। हजारों, लाखों नाउम्मीद लोगों को उस एक शब्द से न्याय की आस बंध जाती है। तभी तो साफ सुनने को मिलता है कि कोई बात नहीं यहां सुनवाई नहीं हुई, कोर्ट तो मेरी बात सुनेगा।

भारत एक धर्मपरायण देश है। विभिन्न प्रकार की धार्मिक आस्थाओं का यहां प्रभाव है। देश का बहुत बड़ा तबका धर्म-कर्म के सार्थक-निरर्थक कथन पर खड़ा होने में देर नहीं लगाता। धर्म के प्रति समर्पण हमारा सामान्य स्वभाव है। भाववतंगीता में कहा गया है कि -

श्रद्धावाल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः, ज्ञानं लब्ध्वा परं शान्तिमचिरेणाधिगच्छति। भाव है कि श्रद्धा रखने वाले मनुष्य, अपनी इन्द्रियों पर संयम रखने वाले मनुष्य, साधनपारायण हो अपनी तत्परता से ज्ञान प्राप्त करते हैं, फिर ज्ञान मिल जाने पर जल्द ही परम-शान्ति को प्राप्त होते हैं। इसी तरह चाणक्य नीति का प्रसिद्ध श्लोक है -

यो धर्म सत्त्वसंपन्नं सततं चानुपश्यति न स पापेषु लिप्येत पद्मपत्रमिवाम्बासु ॥”

जो व्यक्ति सत्त्वसंपन्न होकर हमेशा धर्म का पालन करता है, वह कमल के पते की तरह जल से अछूता रहता है, उसी तरह वह पापों में नहीं लिपन होता। आचार्य चाणक्य के अनुसार, धर्म मनुष्य का स्वाभाविक कर्तव्य और नैतिक आचरण है, जो उसे समाज में अपनी भूमिका निभाने और दूसरों के लिए सही कार्य करने में मदद करता है। धर्म के बिना जीवन निरर्थक है और इसके द्वारा व्यक्ति अपने यश को अमर कर सकता है, क्योंकि धर्म ही उसे मृत्यु के बाद भी जीवित रखता है। सत्य, प्रिय और हितकर वाणी का प्रयोग ही धर्म है, और दान-पुण्य तथा अपने कर्तव्यों का निर्वहन ही वास्तविक धर्म है। ऐसे ही धर्म के प्रति देश में आशा आस्था है। इसके देश में बहुत से उदाहरण हैं।

युस्फको की विश्व धरोहरों में अपना विशेष स्थान रखने वाले खजुराहो के एक मंदिर में भगवान विष्णु की मूर्ति के पुनर्निर्माण की याचिका पर सीजेआई के बयान में कितनी सच्चाई है। इस पर चर्चा करना अब बेमानी है। पर जिस तरह से

इसका प्रसार हुआ इससे धर्मप्रेमियों में नाराजगी की कोई कमी नहीं रही। हालांकि यहाँ यह भी बात गौर करने लायक है कि बयान से विवाद खड़ा होने के बाद सीजेआई ने भी स्पष्ट रूप से कहा कि वे सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी टिप्पणियाँ इस संदर्भ में थीं कि वह मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अधिकार क्षेत्र में आता है।

यहाँ एक बात का ध्यान रखना आज समय की सबसे बड़ी जरूरत है। जमाना आज सोशल मीडिया का है। मिन्टों में एक शब्द पर बवाल हो जाता है। बिना जांचे परखे व्यूज के चक्कर में फॉरवर्ड करने की गति सूर्य की रोशनी से भी तेज विकरल हो गई है। जब तक सत्यता सामने आए तब तक तो बहुत देर हो चुकी होती है। जब बात समाज या धर्म की हो तो उसका लाभ लेने वालों की कोई कमी नहीं। आपदा में अवसर की तरह सुनतप्राय शक्तियाँ निद्रा त्याग पक्ष-विपक्ष दो धड़ों में खड़ी होने में देर नहीं लगाती हैं। इसलिए निवेदन न्याय प्रणाली से भी है कि जब बात किसी आस्था या धर्म की हो तब शब्दों का चयन किसी तरह के विवाद को जन्म देने वाला न हो। शब्दों का बहुत बड़ा भंडार है। संस्कृत के महाकवि भारवि द्वारा रचित किराताजुनीय-की ये पंक्तियाँ आज के समय पर बड़ी सार्थक प्रतीत होती हैं। विधेयान् क्रियामविवेकः सहसा परमापदां नदम्। इसके अर्थ में धर्म के प्रति देश में अनायास पदों करना चाहिए। जल्दबाजी आपदाओं का परम या आश्रय स्थान होती है।

## राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं: अजीत भोगल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर संयोजक अमित चतुर्वेदी का जन्मदिन उत्तहपूर्वक मनाया गया

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गतिविधि ग्राम विकास के नगर संयोजक अमित चतुर्वेदी का जन्मदिन सत्ताइस खोली स्थित भाजपा जिला उपाध्यक्ष अजीत भोगल के कार्यालय में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नगर के अनेक भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अजीत सिंह भोगल (भाजपा जिला उपाध्यक्ष) एवं मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण कश्यप रहे। उनके नेतृत्व में 27 खोली चौक पर आयोजित इस समारोह में पार्टी कार्यकर्ताओं ने अमित चतुर्वेदी को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं और उनके दीर्घायु एवं सामाजिक सेवा के निरंतर विस्तार की कामना की। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष अजीत भोगल ने कहा कि युवा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

कार्यक्रम में विशेष रूप से महामंत्री विजय यादव, महामंत्री संजय अग्रवाल, पार्षद नितिन पटेल, पार्षद कार्तिक यादव, महिला मोर्चा अध्यक्ष चंदना गोस्वामी, युवा मोर्चा अध्यक्ष वैभव गुप्ता, श्रद्धा तिवारी, मीनाक्षी यादव, माया पमनानी, सरिता खांडेकर, कलावती दिवाकर, रंजीता कोली, त्रिवेणी टंडन, रिमता नामदेव, कमल शुक्ला, संजय गुप्ता (पिछड़ा वर्ग मोर्चा अध्यक्ष), सुभाष तिवारी, ध्रुव देवांगन, अरुण निर्णायक, कन्हैया खांडेकर, नीरज सिंह सुक्कू, आनंद कश्यप, गुलशन खानडेकर, भानु श्रीवास, अमर राजपूत, संदीप शुक्ला, हिमांशु गुप्ता,



संतोष टंडन और भूपेंद्र गुप्ता सहित अनेक कार्यकर्ता शामिल हुए।

कार्यक्रम के दौरान सभी ने आपसी एकता, सामाजिक सहयोग और संगठनात्मक सशक्तिकरण के संकल्प के साथ राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। जन्मदिन के अवसर पर केक काटकर शुभकामनाएँ दी गईं और वातावरण जयघोषों से गुंज उठा।

कार्यक्रम का संवाहन भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया और अंत में सभी ने एक साथ “भारत माता की जय” के उद्घोष के साथ आयोजन का समापन किया।



## महर्षि वाल्मीकि: शिक्षा, साधना और समाज का सच

(गुरु का कार्य शिक्षा देना है, किंतु उस शिक्षा का प्रयोग शिष्य के हाथ में है — यही महर्षि वाल्मीकि की जीवनगाथा का अमर संदेश है।)

महर्षि वाल्मीकि जयंती केवल एक संत कवि की स्मृति नहीं, बल्कि उस परिवर्तन की प्रेरणा है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। उन्होंने दिखाया कि शिक्षा और साधना से जीवन का हर रूप बदला जा सकता है। “गुरु का कार्य शिक्षा देना है, पर उसका प्रयोग शिष्य के हाथ में है” — यह संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वाल्मीकि जी ने ज्ञान को मानवता से जोड़ा और समाज को बचाया कि कर्म, विचार और संवेदन ही सत्य की पूजा हैं। उनकी जयंती हमें याद दिलाती है कि हर व्यक्ति अपने भीतर का वाल्मीकि जगू सकता है।

डॉ. प्रियंका सौरभ

कहते हैं, शिक्षा केवल अक्षर ज्ञान नहीं देती, बल्कि वह जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। किंतु उस शिक्षा का प्रयोग कौन-से दिशा में होगा — यह निर्णय हर व्यक्ति को स्वयं करना पड़ता है। यह विचार महर्षि वाल्मीकि के जीवन से बढ़कर और किसकी गाथा कह सकती है? डाकू रत्नाकर से महर्षि वाल्मीकि तक की उनकी यात्रा इस बात का प्रमाण है कि यदि मनुष्य सच्चे ज्ञान से परिचित हो जाए, तो उसका हृदय परिवर्तित हो सकता है, चाहे वह कितना भी अंधकारमय क्यों न हो।

महर्षि वाल्मीकि की जयंती केवल एक महामुद्रण का समर्पण नहीं है, बल्कि वह उस मानवीय संभावना का उत्सव है, जो हमें पशुता से मानवता की ओर ले जाती है। यह जयंती हमें याद दिलाती है कि गुरु के दिवस



की शक्ति तभी सार्थक होती है, जब शिष्य स्वयं उसे सही दिशा में प्रयोग करे। वाल्मीकि जी का जीवन अत्यंत प्रेरणादायक है। वह आरंभ में एक लुटेरा था — रत्नाकर नाम का। अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए वह राहगीरों को लुटता था। किंतु जब एक दिन उसने नारद मुनि को लुटने का प्रयास किया, तो उसके जीवन की दिशा बदल गई। नारद मुनि ने उससे पूछा, “रत्नाकर, क्या तुम्हारा परिवार तुम्हारे पापों में भागीदार होगा?” यह सरल-सा प्रश्न उसके अंतर्मन में तूफान ले आया। जब उसे ज्ञात हुआ कि उसके कर्मों का बोझ कोई साझा नहीं करेगा, तब उसने शस्त्र त्याग दिया और नारद मुनि से ज्ञान प्राप्त किया।

नारद ने उसे “राम-राम” का नाम जपने को कहा। किंतु वह “राम” शब्द उच्चारित नहीं कर सका और “मरा-मरा” कहने लगा। यही “मरा-मरा” जप करते-करते उसका जीवन तपस्या में परिवर्तित हो गया, और वह डाकू से महर्षि बन गया। यही वह क्षण था जब शिक्षा और आत्मबोध का संगम हुआ। यही परिवर्तन आज के समाज की भी सिखाता है कि कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता, बल्कि कर्म और ज्ञान से महान बनता है।

महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है — यानी कवियों में प्रथम। उन्होंने

रामायण जैसी अमर कृति की रचना की, जो न केवल धार्मिक ग्रंथ है बल्कि भारतीय संस्कृति का जीवन दर्शन भी। उन्होंने साहित्य को धर्म, नीति, प्रेम और करुणा के साथ जोड़ा। उन्होंने मानवता के उस आदर्श को शब्द दिए, जहाँ धर्म केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि न्याय, सहानुभूति और कर्तव्य की भावना है।

उनकी रचना का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने एक ऐसा राम प्रस्तुत किया जो केवल राजा नहीं, बल्कि आदर्श मानव है। उन्होंने एक ऐसी सीता को चित्रित किया जो नारी की अस्मिता और धैर्य की प्रतीक है। वाल्मीकि जी ने यह भी बताया कि हर व्यक्ति के भीतर एक ‘राम’ और एक ‘रावण’ बसता है, और निर्णय हमारे हाथ में है कि हम किसें पोषित करते हैं।

आज जब हम वाल्मीकि जयंती मनाते हैं, तो यह केवल श्रद्धा नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का अवसर भी है। समाज में आज भी जाति, भेदभाव और अज्ञान का अंधकार व्याप्त है। वाल्मीकि जी का जीवन इस बात का जीवंत प्रमाण है कि किसी का जन्म नहीं, बल्कि कर्म उसकी पहचान तय करता है। वे स्वयं समाज के उस वर्ग से आए जिसे बाद के समय में “अछूत” कह दिया गया, लेकिन उन्होंने ऐसी रचना की जिसने पूरे आर्यावर्त के नैतिक और

### “महर्षि वाल्मीकि : ज्ञान से जागरण तक”

डॉ. सत्यवान सौरभ

अंधकार था मन भरा, पापी जीवन खेत।  
ज्ञान-सूर्य जब उग गया, हटी तमस की रेत।।

रत्नाकर से ऋषि हुए, तप से बदला भाव।  
शब्दों में करुणा बही, ज्यों सागर में नाव।।

राम नाम की साधना, सुमिरन बना प्रकाश,  
भटका मन पथ पा गया, नभ में सूरज-वास।

गुरु दिया उपदेश जो, सच्चा था वह ज्ञान,  
शिष्य ने अपना लिया, तो जगा अमृत-गान।

वन में बैठा मौन हो, जपता था वो नाम,  
शब्दों से निकली कथा, “रामायण” जप राम।।

जाति नहीं पहचान है, और कर्म आधार।  
कहे वाल्मीकि है यही, यही मनुज का सार।

डाकू भी तब कवि बने, खिलती भीतर धूप।  
मन साधे जब सत्य को, खुले तब आत्म रूप।।

संस्कृतिक जीवन को दिशा दी।

यदि उस युग में भी एक लुटेरा ज्ञान से महर्षि बन सकता है, तो आज हम क्यों नहीं बदल सकते? क्यों आज भी हम जाति के नाम पर लोगों को नीचा दिखाते हैं? क्यों आज भी शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी रह गया है, न कि मानवता की सेवा?

महर्षि वाल्मीकि का संदेश स्पष्ट है —

गुरु केवल ज्ञान का दीपक जलाता है, परंतु उस दीपक से प्रकाश फैलाना शिष्य की जिम्मेदारी है। नारद मुनि ने रत्नाकर को मार्ग दिखाया, लेकिन जगल स्वयं रत्नाकर को मार्ग पड़ा। यही शिक्षा प्रणाली का वास्तविक अर्थ है — शिक्षक केवल दिशा देता है, गंतव्य तय करना शिष्य का काम होता है।

आज के युग में जब शिक्षा केवल

ग्रंथ नहीं रामायण, जीवन का आभास।  
चरित्र में झलके वहाँ, नीति, प्रेम, सुवास।।

महर्षि रका संदेश है, भीतर देखो आप।  
राम वही जो जागता, अंतर के आलाप।।

रत्नाकर था लुट्टिया, मन पापी अज्ञान।  
नारद वाणी लग गई, जाग उठा ईशान।

गुरु सिखाए ज्ञान को, पर अपनाए कौन।  
जो भी अंतर झोंक ले, साधे पवित्र मौन।।

रामायण लिख दी उसने, जो था पहले चोर,  
ज्ञान बदल दे भाग्य भी, यदि जागे मन-डोर।

हर मन में वाल्मीकि है, हर तन में है चोर।  
राम वही जो जान ले, खुद के भीतर शोर।।

रामायण का संदेश है, कर ले अंतर साफ।  
वाह नई तू चल पकड़, खुद को कर के माफ।।

प्रतिस्पर्धा और अंक-तालिकाओं तक सीमित रह गई है, तब वाल्मीकि की शिक्षा की परिभाषा हमें झकझोरती है। वे कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य “मनुष्य बनना” है, न कि केवल “विद्वान बनना”। उन्होंने अपने जीवन से साबित किया कि सबसे बड़ा ज्ञान वही है जो मनुष्य को संवेदनशील बनाए, उसे अहंकार से मुक्त करे, और दूसरों के प्रति



# एस.एम.एस. अस्पताल हादसा — लपटों में दबी लापरवाही की कहानी

राजस्थान के सबसे बड़े अस्पताल एसएमएस हॉस्पिटल (जयपुर) में 5 अक्टूबर देर रात लगभग 11 बजकर 50 मिनट पर आग लग गई। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह आग अस्पताल के ट्रोमा सेंटर (न्यूरोसर्जरी) के आईसीयू वार्ड में लगी। आग की शुरुआत आईसीयू के समीप भंडारण कक्ष में शॉर्ट-सर्किट के कारण मानी जा रही है। कितनी बड़ी बात है कि जब धुआँ फैलने लगा, तो तुरंत अलार्म नहीं बजा और न ही स्मॉकलर प्रणाली सक्रिय हुई। आग लगने से आठ मरीजों की मौत हो गई। वास्तव में यह बहुत ही दुःखद घटना है। कहना चाहिए कि इस प्रकार की घटनाएँ सिर्फ क्षति नहीं देती, बल्कि हतियारों के सुरक्षा, तैयारी और जवाबदेही की अहमियत याद दिलाती हैं। वास्तव में मरीजों की सुरक्षा व्यवस्था को पुष्टि करना अस्पताल प्रबंधन, सरकार व अधिकारियों की जिम्मेदारी है। आज हमारे देश में बहुत से अस्पतालों का इन्फ्रास्ट्रक्चर तक ठीक नहीं है। अस्पतालों में थका देने वाली व्यवस्थाएँ देखने को मिलती हैं। अस्पतालों को हर संभावित खतरों से सुरक्षित रखा जाना चाहिए, लेकिन बहुत ही दुःख है, इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। कई अस्पतालों की छतें बरसात के दिनों में टपकती हैं तो कहीं छतों व फर्शों की हालत ठीक नहीं होती। अग्निशमन की पर्याप्त व्यवस्थाएँ भी बहुत कम नहीं होती हैं। यह बहुत अफसोसजनक है कि अस्पतालों तक में लापरवाही देखने को मिलती है, जो जीवन के केंद्र माने जाते हैं। लापरवाही से हादसे जन्म लेते हैं और जान-माल को नुकसान पहुंचाते हैं और फिर जांच होती है। जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल के ट्रोमा सेंटर

आईसीयू में लगी आग में फिर यही दोहराव दिखाई देता है। अग्निशमन में आठ गंभीर मरीजों की जान ले ली और कई अन्य को जीवन-मृत्यु के संघर्ष में धकेल दिया। बहरहाल, कहना शलत नहीं होगा कि अस्पतालों का इन्फ्रास्ट्रक्चर (बिजली, पानी संचयन) मजबूत होना जनस्वास्थ्य की पहली आवश्यकता है। सुविधाजनक भवन, स्वच्छ वार्ड और आधुनिक उपकरण उपचार की गुणवत्ता बढ़ाते हैं। आपातकालीन सेवाओं के लिए एंबुलेंस, जनरेटर व जल आपूर्ति अनिवार्य हैं। सुरक्षा व्यवस्था के तहत अस्पतालों में सीसीटीवी, गार्ड और अग्निशमन तंत्र होना चाहिए। साथ ही साथ, रोगियों व परिजनों की आवाजाही नियंत्रित और सुरक्षित वातावरण में होनी चाहिए। वास्तव में, सुदृढ़ इन्फ्रास्ट्रक्चर और सुरक्षा ही भरोसेमंद स्वास्थ्य सेवा की नींव है। वास्तव में अस्पतालों में उन्नत अग्नि सुरक्षा प्रणाली जैसे कि अलार्म, स्मॉकलर, फायर डोर, धुआँ निकालने की व्यवस्था आदि आवश्यक रूप से होनी चाहिए। नियमित फायर ड्रिल और प्रशिक्षण तो जरूरी है ही। अस्पतालों में आपात प्रबंधन प्रोटोकॉल लागू किया जाना चाहिए, जैसे कि आग लगने पर तुरंत कार्रवाई, मरीजों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना, प्राथमिक चिकित्सा इत्यादि। बहुत बार यह देखा जाता है कि अस्पतालों में ठीक से तकनीकी निगरानी नहीं की जाती। अस्पतालों में बिजली नेटवर्क, उपकरणों का इन्स्पेक्शन और मरम्मत की नियमित व्यवस्था होनी चाहिए। ऊपर बताया जा चुका है कि अस्पतालों में संरचनात्मक सुधार पर ध्यान दिया जाना बहुत ही महत्वपूर्ण और अहम है। वास्तव में आईसीयू व



आपत्कालीन वार्ड के डिजाइन में ऐसी व्यवस्थाएँ होनी चाहिए कि धुआँ और आग स्वयं बाहर निकल सके। आत्मपरीक्षण और स्वतंत्र जांच से दोषों की पहचान और सुधार संभव है। इसके बावजूद भी यदि कोई घटना घट भी जाती है तो परिवारों के साथ परादर्शिता बरती जानी चाहिए तथा घटना के बाद मानवीय संवेदनशीलता दिखाते हुए गठित जाँच रिपोर्ट और मुआवजे की व्यवस्था होनी चाहिए। बहरहाल, राजस्थान की राजधानी जयपुर में हुआ यह हादसा केवल तकनीकी खराबी नहीं, बल्कि हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था की एक कड़वी सच्चाई है। ऑक्सिजन पाइपलाइन के पास इलेक्ट्रिक वायरिंग, निष्क्रिय इमरजेंसी रिस्पॉन्स, खराब अग्निशमन यंत्र और अप्रशिक्षित स्टाफ, इन सबने मिलकर हालात ऐसे बना दिए कि बाहर से खिड़कियाँ तोड़कर आग

पर काबू पाया गया। बावजूद इसके जिंदगियाँ राख हो गईं। अस्पताल में आग लगने की यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी अनेक घटनाएँ घटित हो चुकी हैं। पाठकों को बताता चूँकि सबसे भयावह घटना वर्ष 2011 में कोलकाता के एएमआरआई अस्पताल में हुई थी, जहाँ बेसमेंट में शॉर्ट सर्किट से लगी आग ने भयंकर रूप ले लिया था और लगभग 89 लोगों की जान चली गई थी। इसके बाद वर्ष 2020 में विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) के रूपम पैलेस होटल में, जिसे कोविड अस्पताल के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था, आग लगने से 11 लोगों की मौत हुई। वर्ष 2021 में महाराष्ट्र के विरार स्थित एक कोविड अस्पताल में आईसीयू में आग लगने से 13 मरीजों की मौत हुई थी, जबकि उसी एंसे बना दिए कि बाहर से खिड़कियाँ तोड़कर आग

लगी आग में चार लोगों की जान गई। बड़ी बात तो यह है कि हाल ही के वर्षों में भी यह खतरा कम नहीं हुआ है। 2024 में दिल्ली के पश्चिम विहार स्थित आई मंत्र अस्पताल में आग लगी, हालाँकि, सभी मरीजों को सुरक्षित निकाल लिया गया। इसी प्रकार से 2025 में लखनऊ के लोकबंधु अस्पताल में भी आग की घटना हुई, जिसमें सैकड़ों मरीजों को तत्काल बाहर निकाला गया और कोई बड़ी जनहानि नहीं हुई। इन घटनाओं से कहीं न कहीं यह स्पष्ट होता है कि भारत में अस्पतालों में अग्नि सुरक्षा मानकों की अनदेखी, विद्युत शॉर्ट सर्किट, और आपातकालीन निकासी प्रणाली की कमी जैसी समस्याएँ अब भी गंभीर और संवेदनशील हैं। यह जरूरी है कि अस्पतालों में नियमित फायर ऑडिट, सुरक्षा उपकरणों की जांच, और कर्मचारियों को अग्निशमन प्रशिक्षण जैसे उपाय सख्ती से लागू किए जाएँ, ताकि भविष्य में इस तरह की दर्दनाक घटनाओं को रोका जा सके। यह बहुत ही बड़ी बात है कि आज विभिन्न अस्पतालों में फायर अलार्म बंद पड़े रहते हैं और बहुत बार निकासी मार्ग तक अवरोध होते हैं। और तो और अस्पतालों के भीतर ज्वलनशील सामग्रियों तक भी देखने को मिल जाती है। अस्पतालों के निरीक्षण होते हैं, लेकिन ये निरीक्षण केवल कागजों तक ही सीमित होते हैं। कितनी बड़ी बात है कि आज भी हमारे देश में कई अस्पताल बिना फायर एनओसी (अनापत्ति प्रमाणपत्र) के ही चल रहे हैं। भला इससे बड़ी लापरवाही और क्या हो सकती है? अस्पतालों में आग से कोई सुरक्षा नहीं? सवाल है कि क्या हम अस्पतालों में आग को अब भी 'दुर्घटना' कहकर ही टालते रहेंगे?

सवाल यह भी है कि क्या हर मौत के बाद जांच समिति बना देने से सरकार/प्रशासन की जिम्मेदारी पूरी हो जाती है? क्या मरीजों की जान की कीमत केवल मुआवजे की रकम है? फायर सेफ्टी ऑडिट एक व्यवस्थित और तकनीकी जांच प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य किसी भवन, संस्था, उद्योग या अस्पताल आदि में आग से सुरक्षा उपायों की प्रभावशीलता और तत्परता का मूल्यांकन करना होता है, लेकिन आज सरकारें फायर सेफ्टी ऑडिट के आदेश तो देती हैं, पर पालन नगण्य है। इसे ठीक नहीं ठहराया जा सकता है। फायर सेफ्टी का हर हाल में पालन किया जाना चाहिए। वास्तव में अस्पतालों में सुरक्षा प्राथमिकता होनी चाहिए, न कि इसे बोझ समझा जाना चाहिए। अस्पतालों में मॉक ड्रिल का उद्देश्य आपात स्थिति जैसे कि आग लगना, भूकंप या विस्फोट—के समय कर्मचारियों, मरीजों और आगंतुकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना होता है। यह एक पूर्वाभ्यास है जिससे सभी को वास्तविक संकट से निपटने का व्यावहारिक अनुभव मिलता है, इसलिए मॉक ड्रिल को समय-समय पर अंजाम दिया जाना चाहिए, क्यों कि इससे तत्परता बढ़ती है, निकासी प्रक्रिया में सुधार होते हैं, सिस्टम की कमियाँ उजागर होती हैं, टीमवर्क और समन्वय बढ़ता है, तथा बार-बार अभ्यास से अस्पताल की सुरक्षा व्यवस्था पर लोगों का भरोसा बढ़ता है। सच तो यह है कि समय पर और प्रशिक्षित प्रतिक्रिया से जान-माल की हानि को न्यूनतम किया जा सकता है।

सुनील कुमार महला, प्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

## कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा ने एक ही दिन में 149.02 किलोमीटर सड़कों के नवीनीकरण का किया शुभारंभ

— 40.12 करोड़ रुपये की लागत से 48 सड़कों का होगा नवीनीकरण, टेकेदार द्वारा 5 साल तक रखरखाव भी किया जाएगा

— जनता से मिले प्यार का बदला चुकाने की कोशिश - अमन अरोड़ा

लॉगोवाल, (जगसीर सिंह) - सुनाम विधानसभा क्षेत्र के विकास में एक नया मील का पत्थर स्थापित करते हुए, पंजाब के कैबिनेट मंत्री श्री अमन अरोड़ा ने आज एक ही दिन में अपने क्षेत्र में 149.02 किलोमीटर सड़कों के नवीनीकरण का शुभारंभ किया। श्री अमन अरोड़ा के विशेष प्रयासों से शुरू हुए इन विकास कार्यों को क्षेत्र के लोगों ने पंजाब सरकार द्वारा सुनाम उधम सिंह वाला क्षेत्र को दिया गया एक बड़ा तोहफा बताया है। आज कस्बा लॉगोवाल, गाँव शाहपुर कलां, मंडेर कलां, उभावाल और एलवाल में विभिन्न कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए श्री अरोड़ा ने कहा कि इन सभी सड़कों पर 1.5 करोड़ रुपये की लागत आएगी। 140.12 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले इन सभी कार्यों को अगले 7-8 महीनों में पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह पहली बार है कि अगले 5 वर्षों तक इन ग्रामीण सड़कों का रखरखाव भी टेकेदार द्वारा ही किया जाएगा। सड़कों के साथ-साथ अन्य सभी विकास कार्यों में गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा।



उन्होंने लोगों को आमंत्रित किया कि वे अपनी देखरेख में होने वाले सभी विकास कार्यों को संतुष्टि के साथ करवाएँ। उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े तीन वर्षों के दौरान श्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में पंजाब सरकार राज्य के सर्वश्रेष्ठ विकास के लिए दृढ़ प्रयास कर रही है। राज्य के लोगों ने उन्हें विकास के लिए वोट दिया था। जिसके चलते पंजाब सरकार लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि वह वादे निभाएंगे कि विकास नहीं रखते। सभी काम साफ नीयत से होते हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार राज्य में स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे के विकास को मजबूत करने के लिए बड़े स्तर पर काम कर रही है। पिछली सरकारों की गलत नीयत और गलत नीतियों के कारण राज्य विकास के मामले में पिछड़ गया था। लेकिन जब से आप

पाटी सत्ता में आई है, तब से सर्वोपयोगी विकास को प्राथमिकता के तौर पर बल दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि गाँववासी लंबे समय से इन विकास कार्यों की माँग कर रहे थे। जिसे पंजाब सरकार ने आज पूरा कर दिया है। जो काम पिछले 75 सालों में नहीं हुए, उन्हें आज प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वह लोगों से मिल रहे प्यार का बदला चुकाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनके पिता बाबू भगवान दास ने सिखाया है कि राजनीति में लालच नहीं, काम से प्यार होना चाहिए। हलके में हर महत्वपूर्ण काम को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जा रहा है। अगले एक साल में इलाके का कोई भी काम लंबित नहीं रहेगा। उन्होंने जहाँ इलाका निवासियों को बधाई दी, वहीं भविष्य में भी हर तरह की सेवा में हाजिर रहने

का भरोसा दिया। उन्होंने कहा कि अच्छा बुनियादी ढाँचा उपलब्ध होने से पूरे सुनाम हलके में विकास की गति तेज होगी। आगामी तर्जतार उपचुनाव के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि इस चुनाव में आप उम्मीदवार की जीत निश्चित है। इस अवसर पर मार्केट कमेटी संस्कार के चेयरमैन अवतार सिंह एलवाल, नगर पंचायत चीफा के प्रधान वीरबल सिंह, नगर कौंसिल लॉगोवाल की प्रधान श्रीमती परमिंदर कौर बराड़, कौंसिल की उपाध्यक्ष श्रीमती सुष्मा रानी, सरपंच बलविंदर सिंह दिल्ली, आम आदमी पार्टी के सीनियर नेता राज सिंह बरवा, आम आदमी पार्टी के ब्लॉक प्रधान विककी चिष्ट, नगर कौंसिल के पूर्व प्रधान व वर्तमान पाषंद मेला सिंह सुबेदार, पाषंद गुरमीत सिंह लाली, नगर कौंसिल के पूर्व उपाध्यक्ष व मौजूदा पाषंद रणजीत सिंह सिद्धू, उपस्थित थे। इस मौके पर पाषंद रीना रानी, पाषंद बलविंदर सिंह काला, पाषंद बलविंदर सिंह सिद्धू वरिष्ठ आप नेता कमल बराड़, आप नेता सिसनपाल गंगा सरपंच भीम दास बाबा, सरपंच निहाल सिंह, सरपंच गोविंद सिंह, सरपंच जगराज सिंह, हवलदार प्रीतम सिंह, केसर सिंह औजला, बंत सिंह, मनप्रीत सिंह मौजूद थे। सजजन, आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

## नसिया जी इन्दौर में आचार्य श्री के चरणों की स्थापना की गई



हरिहर सिंह चौहान श्री पाश्र्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर जबरी बाग नसिया इन्दौर में आचार्य श्री के पावन चरणों की स्थापना आज शरदपूर्णिमा के पावन अवसर की गई। जब इसी दिन आप पुण्य धरा पर अवतरित हुए थे। समाधिस्थ संत परम पूज्य तपोनिधि, संयम व त्याग के अद्वितीय आदर्श, धर्मसंघ के शिरोमणि एवं वाग्मी, वर्तमान युग के परम तपस्वी व प्रेरणा पुंज आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज, जिन आचार्यों ने आजीवन तप, संयम और त्याग से अपने जीवन को पवित्र बनाया है, आज शरदपूर्णिमा के दिन ही आप अवतरण हुआ था। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन चरणों की स्थापना की नसिया जी इन्दौर में कि गई।

इस पावन अवसर पर ब्रह्मचारी भावेश भैया जी ऊन वालों ने आचार्य छतिसी विधान पूजा की जिसमें नसिया के वरिष्ठ धीरेन्द्र कुमार कासलीवाल, प्रसिद्ध वास्तुविद राजेन्द्र जैन, वरिष्ठ हाईकोर्ट एडवोकेट वीर कुमार जैन, महेंद्र कुमार जैन, प्रकाश चन्द्र शास्त्री, विशाल जैन सियागंज, उज्ज्वल जैन, राजेश जैन, सचिन जैन, दीपक जैन, मोनू जैन त्याग से अपने जीवन को पवित्र बनाया है, आज शरदपूर्णिमा के दिन ही आप अवतरण हुआ था। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन चरणों की स्थापना की नसिया जी इन्दौर में कि गई।

त्याग से अपने जीवन को पवित्र बनाया है, उनके पावन चरणों की स्थापना स्थल को तीर्थतुल्य बना देती है। ऐसे संत, जिन्होंने अपने जीवन को केवल धर्म, तप और मोक्ष साधना के लिए समर्पित कर दिया है, उनके चरणों की स्थापना करना प्रत्येक साधक के लिए परम सौभाग्य का अवसर है। यह न केवल स्थान को पवित्र बनाता है, बल्कि हमारे जीवन में भी आध्यात्मिक ऊर्जा, संयम और श्रद्धा का संचार करता है। यहां जानकारी समाजिक कार्यकर्ता व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञापित में दी है।

## 'तरन्नुम' हिंदी-उर्दू शायरी, कविताओं और संगीत की अनमोल निधि है....

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह तरन्नुम शब्द अपने भीतर एक ख़ास जादू समाए हुए है, जो भाषा को संगीत की तरह बहने और शब्दों को जीवन देने की शक्ति रखता है। यह शब्द सिर्फ एक तकनीकी लहजे या स्वर का नाम नहीं, बल्कि आत्मा का वह नूर है जो हर फ़ानी लफ़्ज़ को भी अमर कर देता है। तरन्नुम का असूल अरबी जुबान से लिया गया है, जिसका मतलब है गुनगुनाना, मकाम (संगीत की सुर लहर), और लयबद्ध आवाज़. उर्दू और हिंदी शायरी की रौनक को तरन्नुम की वो मिठास है, जो हर शेर को एक नई जिंदगी देता है, हर मिस्त्रे को एक नूतनी चमक। जब शायर अपने शेर या ग़ज़ल को तरन्नुम के साथ पढ़ता है, तो वह

सिर्फ शब्दों का इजहार नहीं करता, बल्कि अपनी महज आवाज़ को एक मक़ाम की तरह सजाता है, जो दिलों को छू जाता है। यह वह जादू है जो अहसास को सीधे दिल तक पहुँचाता है, और सुनने वाले को भाषा के पार, एक अनुभव की गहराई में ले जाता है। शायरी में तरन्नुम की मिठास ही वह रस है जो हर सुनने वाले को महसूस होता है, चाहे वह पहली बार सुन रहा हो या बार-बार। तरन्नुम न केवल आवाज़ का खेल है, बल्कि यह एक प्रकार की हुनरमंदी आवाज़. उर्दू और हिंदी शायरी की रौनक को तरन्नुम की वो मिठास है, जो हर शेर को एक नई जिंदगी देता है, हर मिस्त्रे को एक नूतनी चमक। जब शायर अपने शेर या ग़ज़ल को तरन्नुम के साथ पढ़ता है, तो वह

मौजूदगी अनिवार्य होती है। यही तरन्नुम है जो शायरी को सिर्फ पढ़ने से सुनने तक, और सुनने से महसूस करने तक ले जाता है। आज के आधुनिक दौर में, डिजिटल मंचों ने तरन्नुम को नई शकल दी है, जहाँ कवि और गायक अपनी कला को ऑडियो और वीडियो के जरिए संप्रेषित करते हैं। तरन्नुम की स्पष्टता, उसकी लयबद्धता, और भावों का प्रवाह ही एक कला-निर्माण प्रक्रिया को सफल बनाता है। वह तालमेल जो शब्द और सुर के बीच बनता है, उसे बिना तरन्नुम के अधूरा माना जाता है। इसलिए, तरन्नुम को केवल एक लय कहना काफी नहीं होगा, यह एक जुबान है, जादू है, जिसमें शब्द संगीत के रंगों में रंग जाते हैं, और एक आम संवाद एक फ़न-

ओ-हुनर की मिसाल बन जाता है। यह वह जीता-जागता एहसास है, जो भाषा को साधारण से गौर-मामूली बनाकर हर दिल में जगह बना देता है। इसी लिए आदर्श मंचों ने तरन्नुम को नई शकल दी है, जहाँ कवि और गायक अपनी कला को ऑडियो और वीडियो के जरिए संप्रेषित करते हैं। तरन्नुम की स्पष्टता, उसकी लयबद्धता, और भावों का प्रवाह ही एक कला-निर्माण प्रक्रिया को सफल बनाता है। वह तालमेल जो शब्द और सुर के बीच बनता है, उसे बिना तरन्नुम के अधूरा माना जाता है। इसलिए, तरन्नुम को केवल एक लय कहना काफी नहीं होगा, यह एक जुबान है, जादू है, जिसमें शब्द संगीत के रंगों में रंग जाते हैं, और एक आम संवाद एक फ़न-

## रजोकरी गाँव में राव डालचन की स्मृति में हवन, पूजा एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: रजोकरी गाँव के संस्थापक वीर शिरोमणि राव डालचन जी की स्मृति में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी भव्य हवन एवं पूजा समारोह का आयोजन किया गया। राव डालचन ने वर्ष 1545 में रजोकरी गाँव की स्थापना की थी। कहा जाता है कि उन्होंने गाँव की नींव उस स्थान पर रखी थी जहाँ उन्होंने मुख्य जल स्रोत के रूप में एक कुआँ देखा था, जो उस समय वहाँ का एक मात्र जल स्रोत था। इस कारण लोग यहाँ बसने लगे और धीरे-धीरे रजोकरी गाँव की निर्माण हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया।



सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्राचीन कुएँ का सौंदर्यीकरण कार्य पूरा किया गया तथा राव डालचन जी की प्रतिमा को टिन शेंड के माध्यम से कवर कर संरक्षित किया गया।

ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं में दौड़, वॉलीबॉल, खो-खो सहित विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। जहाँ बच्चों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए खेल भावना और अनुशासन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में गाँव के वरिष्ठ नागरिकों, गणमान्य व्यक्तियों और ग्रामीणों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। सभी ने राव डालचन के योगदान को नमन किया।

## चुनाव शंखनाद के साथ झामुमो के सांसद, मंत्री पहुंचे घाटशिला बूथ मजबूती करने पर दिया जोर

चार पूर्व मुख्यमंत्री एक तरफ हेमंत एक तरफ: दीपक बिरुआ - मंत्री कार्तिक कुमार परिखा, स्टेड हेड - झारखंड

सरायकेला, घाटशिला के टाउन हॉल में झामुमो के विधानसभा स्तरीय प्रशिक्षण शिविर में झारखंड सरकार के उच्च तकनीकी शिक्षा मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू, परिवहन मंत्री दीपक बिरुआ, सांसद जोबा माझी समेत कई नेता पहुंचे। इस प्रशिक्षण शिविर में विधानसभा के विभिन्न प्रखंड से पार्टी के पदाधिकारी, बूथ स्तर से सक्रिय पांच पांच सदस्य पहुंचे। कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों के बीच मंत्रियों ने घाटशिला उभे चुनाव के लिए शंखनाद करते हुए सभी को बुध मजबूत करने का संकल्प लिया। मंत्रियों ने कार्यकर्ताओं के बीच जोश भरने का काम किया। प्रशिक्षण शिविर में बहरगोड़ा के



विधायक समीर मोहंती, पूर्व विधायक कुणाल सारंगी, लक्ष्मण टुडू, सोमेश सोरेन, मोहन कर्मकार, राजू गिरी, लाला परिषद चेरमैन बारी मुर्मू समेत कई नेता मौजूद थे। दीपक बिरुआ ने कहा जिल्ला भी प्रयास भाजपा कर ले इस क्षेत्र से हमारे जड़ को

हिलाना मुश्किल है। प्रत्येक बूथ में 500 वोट लाने का संकल्प लेना होगा। कोई भी घाटशिला से आपको हरावे तो चुनौती नहीं दे सकता है। रामदास सोरेन ने जिस विश्वास से घाटशिला का नेतृत्व किया, इस क्षेत्र को

विकसित क्षेत्र बनाने का काम किया। आज वे हमारे बीच में नहीं, लेकिन उनके भावनाओं को आगे बढ़ाने का काम करना है। युवा नेता सोमेश सोरेन के नेतृत्व में आगे बढ़ना होगा। एक तरफ हमारे सीएम हेमंत सोरेन हैं, दूसरे तरफ कोल्हान के चार पूर्व मुख्यमंत्री।

## जमीन घोटाले का पर्याय बना झारखंड में फिर एक पूर्व सीओ को एसीबी ने उठाया

झारखंड के प्रशासनिक माहौल में मची खलबली कार्तिक कुमार परिखा, स्टेड हेड - झारखंड

रांची। आज यह घटना है हजारीबाग खामसहले के पुनः उस जमीन घोटाले की जिम्मेदार महेशा आईएसपी जी जेल जाते रहे हैं। जहां इस झारखंड में आज मां-माटी का घोटाला हो, सैकड़ों केस प्रतिवर्ष होते आये हैं जहां उचित निगरानी का धोर अभाव हो एवं दंडात्मक कार्रवाई नहीं के बराबर हो। ऐसे में यह अब महामारी बन जाय तो भला झारखंड का गठन क्या इसी को लेकर हुआ था- यह आज यक्षप्रश्न बन कर हर सत्तासीन सरकार को चुके आये हैं। जबसे 2000 से अब तक जमीन घोटाले का घोर अभाव है। अब तो आम आदमी का यौना कुम्हर हो चला है कर्मचारी, अधिकारी उनके सरकारी कार्यालय का चक्कर अपना काम धंधा छोड़ काटने नजर आते हैं!!

इसी क्रम में चतरा जिले में सोमवार दोपहर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की विशेष टीम की कार्रवाई ने प्रशासनिक माहौल गर्मी बढ़ा दी है। झारखंड एसीबी की टीम ने ग्रामीण विकास अधिकरण की निदेशक अलका कुमारी को उनके कार्यालय से अपने कब्जे में लेने के बाद देर शाम तक पूछताछ की। इसके बाद उन्हें पुलिस अधीनस्थ में उनके नगवां मोहल्ला स्थित आवास पर रखा गया। पूरी रात कड़ी सुरक्षा घेरे में रखने के बाद मंगलवार अहले सुबह एसीबी की टीम उन्हें लेकर हजारीबाग रवाना हो गई। सूत्रों के अनुसार, यह पूरी कार्रवाई हजारीबाग के चतुर्दश खासहल जमीन घोटाले से जुड़ी है। इस घोटाले के समय अलका कुमारी सरदर अंचल अधिकारी के पद पर थीं। माना जा रहा है कि एसीबी टीम उन्हें आज पूछताछ के

बाद न्यायालय में पेश कर सकती है। विभागीय सूत्रों के अनुसार, पूर्व में जेल में बंद निर्लांबित की कार्रवाई ने प्रशासनिक माहौल गर्मी बढ़ा दी है। झारखंड एसीबी की टीम ने ग्रामीण विकास अधिकरण की निदेशक अलका कुमारी को उनके कार्यालय से अपने कब्जे में लेने के बाद देर शाम तक पूछताछ की। इसके बाद उन्हें पुलिस अधीनस्थ में उनके नगवां मोहल्ला स्थित आवास पर रखा गया। पूरी रात कड़ी सुरक्षा घेरे में रखने के बाद मंगलवार अहले सुबह एसीबी की टीम उन्हें लेकर हजारीबाग रवाना हो गई। सूत्रों के अनुसार, यह पूरी कार्रवाई हजारीबाग के चतुर्दश खासहल जमीन घोटाले से जुड़ी है। इस घोटाले के समय अलका कुमारी सरदर अंचल अधिकारी के पद पर थीं। माना जा रहा है कि एसीबी टीम उन्हें आज पूछताछ के



# विश्लेषण विशेष : डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय संयोजक, ओ.बी.सी. अधिकार मंच बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में “युवा शक्ति” बनेगी परिवर्तन की निर्णायक धुरी

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की घोषणा के साथ ही राज्य की राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर चुकी है। चुनाव आयोग के अनुसार, इस बार कुल 243 विधानसभा सीटों पर मतदान दो चरणों में – 6 नवंबर और 11 नवंबर को होगा, जबकि परिणाम 14 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। राज्य में कुल 7.41 करोड़ मतदाता हैं, जिनमें युवाओं और महिलाओं की भूमिका अभूतपूर्व रहने वाली है। विशेषकर 14 लाख नए युवा मतदाता, जो पहली बार मतदान करेंगे, इस चुनाव में निर्णायक शक्ति साबित हो सकते हैं।

◆ **युवा शक्ति: परिवर्तन की सबसे बड़ी उम्मीद**

बिहार में 25 वर्ष से कम उम्र की आबादी लगभग 58% है, यानी आधे से अधिक बिहार युवा है। लेकिन राजनीति में उनका वास्तविक प्रतिनिधित्व आज भी सीमित है। पिछले चुनावों में देखा गया है कि 40 वर्ष से कम उम्र के उम्मीदवारों की जीत का प्रतिशत कम रहा है, क्योंकि मतदाता प्रायः अनुभव को प्राथमिकता देते हैं। फिर भी इस बार हालात बदले हुए हैं — युवा अब सिर्फ दर्शक नहीं, बल्कि परिवर्तन के वाहक

बन चुके हैं। सोशल मीडिया से लेकर जनसभाओं तक, हर जगह उनकी आवाज बुलंद हो रही है।

◆ **प्रमुख मुद्दे जो युवाओं को झकझोर रहे हैं**

- बेरोजगारी:** बिहार में युवाओं की बेरोजगारी दर 15-17% के आसपास है, जो देश में सबसे अधिक है। ग्रामीण इलाकों में यह दर 25% से भी अधिक है। तकनीकी शिक्षा के अभाव, उद्योगों की कमी और अवसरों के पलायन ने युवा वर्ग को निराश किया है।
- शिक्षा और कौशल विकास:** युवाओं का सबसे बड़ा सवाल यही है — “रोजगार कब मिलेगा?”
- राजनीतिक प्रतिनिधित्व:** युवाओं को लगता है कि पिछले दो दशकों में उनकी बातों को गंभीरता से नहीं सुना गया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की लंबी पारी अब चुनौती के घेरे में है। तेजस्वी यादव जैसे युवा नेता का उभार यह संकेत देता है कि बिहार का युवा अब “नए नेतृत्व की तलाश” में है।
- दलों की रणनीति: युवा फोकस की होड़**

एक्स (ट्विटर) और सोशल मीडिया पर यह ट्रेंड बढ़ रहा है कि अब बिहार को सबसे युवा मुख्यमंत्री चाहिए।

◆ **एनडीए (बीजेपी-जेडीयू गठबंधन):** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में 62,000 करोड़ रुपये की युवा-केंद्रित योजनाओं की घोषणा की है, जिनमें आईटीआई अपग्रेडेशन, स्किल लैब्स, छात्रवृत्ति, और 5 लाख स्नातकों के लिए ₹1,000 मासिक भत्ता जैसी पहलें शामिल हैं। एनडीए का फोकस “विकास और स्थिरता” पर है।

◆ **आरजेडी (कांग्रेस):** नवीनतम सर्वेक्षणों में एनडीए को 12% वोट शेर की बढ़त बताई जा रही है।



नीतीश कुमार और मोदी — दोनों को इस गठबंधन का “अनुभव और भरोसे” का चेहरा बनाया गया है।

पर है। तेजस्वी यादव को एक “युवा आइकन” के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। उन्होंने 10 लाख सरकारी नौकरियों का वादा दोहराया है और “युवा चौपाल” जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से राज्यभर में युवाओं को जोड़ा जा रहा है।

आरजेडी का दावा है कि बिहार का युवा अब एनडीए से बदलाव चाहता है।

◆ **अन्य फैक्टर:** राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एन सी पी) व जनसुराज (प्रशांत किशोर) जैसी पार्टियां युवा रणनीतिकार, और पुष्पम प्रिया जैसी नई राजनीतिक एंटी भी इस बार चुनावी समीकरणों को प्रभावित कर सकती हैं। कई दल 50% तक युवा उम्मीदवार मैदान में उतारने की तैयारी में हैं, ताकि युवा ऊर्जा को सीधे जोड़ सकें।

◆ **ओ.बी.सी. अधिकार मंच का दृष्टिकोण**

डॉ. राजकुमार यादव ने कहा —

> “बिहार का भविष्य तभी बदलेगा जब युवा और ओ.बी.सी. एक साथ जागरूक होकर मतदान करेंगे।

बेरोजगारी, शिक्षा, सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दे ही इस बार के चुनाव की असली कसौटी हैं। युवाओं को जाति नहीं, रोजगार और विकास पर वोट देना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि बिहार का युवा अब “सुप्त योजनाओं से आगे बढ़कर नीति और नीयत” देखना चाहता है। युवा वर्ग अब नारा नहीं, नया बिहार चाहता है —

जहां शिक्षा, उद्योग और रोजगार के अवसर हर जिले में समान रूप से उपलब्ध हों।

◆ **निष्कर्ष**

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 सिर्फ सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि पीढ़ी परिवर्तन का चुनाव साबित हो सकता है। एक ओर एनडीए “स्थिरता और अनुभव” का नारा दे रहा है, तो दूसरी ओर महागठबंधन “युवा जोश और परिवर्तन” का। कौन बाजी मारेगा — यह 14 नवंबर को साफ होगा।

पर इतना तय है कि इस बार “युवा शक्ति ही बिहार की राजनीति का असली किंगमेकर” होगी किन्तु र ओबीसी ही असरदार असर दिखायेगा।

## स्वास्थ्य अधिकारियों और नगर निगम की टीम ने नगर कीर्तन के मार्ग की सफाई करवाई

अमृतसर 7 अक्टूबर (साहिल बेरी)

चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश गुरुपर्व के संबंध में निकाले जाने वाले नगर कीर्तन से पहले मेयर जतिंदर सिंह भाटिया, नगर निगम आयुक्त बिक्रमजीत सिंह शेरगिल, स्वास्थ्य अधिकारियों और नगर निगम की टीम ने नगर कीर्तन के मार्ग की सफाई करवाई। इस अवसर पर संत बाबा सुखविंदर सिंह भूरी वाले, शिरोमणि कमेटी के सदस्य भाई राजिंदर सिंह मेहता सहित शिरोमणि कमेटी के अन्य गणमान्य व्यक्ति और धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। सफाई सेवा की शुरुआत घंटा घर चौक से हुई। इस दौरान फायर ब्रिगेड की टीमों ने नगर कीर्तन वाले रास्ते पर पानी से सफाई की। इस अवसर पर मेयर जतिंदर सिंह भाटिया, बाबा सुखविंदर सिंह भूरी वाले, भाई राजिंदर सिंह मेहता, आयुक्त बिक्रमजीत सिंह शेरगिल, अमरजीत सिंह, सेवक जल्था चौक की गुरुद्वारा शहीद गंज कुलदीप सिंह पंडोरी और उनके जल्थे के सदस्यों ने खुद झाड़ू लगाकर सेवा की। इस अवसर पर मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने कहा कि अमृतसर शहर की स्थापना श्री गुरु रामदास जी ने करवाई थी और इस शहर की सेवा



केवल भाग्यशाली लोगों को ही मिलती है, और वह इस सेवा का मौका मिलने पर खुद को भाग्यशाली समझते हैं। उन्होंने कहा कि नगर निगम और संगत द्वारा श्री हरमंदिर साहिब के आसपास के क्षेत्र को साफ-सुथरा रखने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं, जहां रोजाना लाखों श्रद्धालु मत्था टेकने आते हैं। श्री हरमंदिर साहिब से लगे इलाकों को दिन-रात सफाई की जा रही है।

सभी को श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश गुरुपर्व की बधाई। इस शुभ दिन पर, हम गुरु रामदास जी द्वारा सिखाए गए विनयता, निस्वार्थ सेवा और दया के शाश्वत मूल्यों का सम्मान करते हैं। उनकी दिव्य शिक्षाएं हम सभी को शांति, समृद्धि और एकता के मार्ग पर प्रेरित करती हैं। आइए हम इन मूल्यों को हमेशा के लिए अपनाएं।

## झारखंड के आदिवासी छात्रों को मिलेगा निःशुल्क मेडिकल और इंजीनियरिंग कोचिंग: चामरा लिंडा, मंत्री

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, झारखंड सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति वर्ग के मेधावी विद्यार्थियों के लिए एक ऐतिहासिक पहल की गई है। कोटा के प्रतिष्ठित मोशन एजुकेशन संस्थान के सहयोग से अब झारखंड के विद्यार्थियों को नोट और जेईई जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की निःशुल्क कोचिंग राज्य में ही उपलब्ध कराई जाएगी। रांची के हिंदपीडी स्थित कल्याण विभाग के भवन में कोचिंग का संचालन किया जाएगा। इस योजना के संचालन एवं पर्यवेक्षण की जिम्मेदारी अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग को सौंपी गई है। मंगलवार को विभाग ने कोचिंग संस्थान को कार्य आदेश निर्गत किया। इसमें राज्य के लगभग 300 विद्यार्थियों को पहले चरण में इस योजना का लाभ मिलेगा, जिनका चयन शैक्षणिक योग्यता और निर्धारित मापदंडों के आधार पर किया गया है। कल्याण मंत्री चमरा लिंडा ने कहा है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हमारे विद्यार्थियों को अवसर और मंच मिलना अत्यंत आवश्यक है। झारखंड के बच्चे भी आई आई टी, ए आई आई एम एस और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों में जाएं इसके लिए उन्हें उचित संसाधन और वातावरण देना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कई प्रतिभाशाली विद्यार्थी संसाधनों की कमी और उचित मार्गदर्शन के



अभाव में पिछड़ जाते हैं। हमारा प्रयास है कि झारखंड का कोई भी गरीब विद्यार्थी बेरोजगार होकर न लौटे, बल्कि कुछ बनकर, आत्मविश्वास के साथ लौटे। सरकार की यह पहल हमारे युवाओं को नई दिशा और ऊर्जा देगी। मंत्री चमरा लिंडा ने कल्याण आयुक्त कुलदीप चौधरी के साथ छात्रावास, पुस्तकालय और भोजनालय का निरीक्षण किया तथा सभी आवश्यक सुधार और सुविधाओं के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की योजना है कि आने वाले चरणों में राज्य व राष्ट्रीय सिविल सर्विस जैसी प्रतियोगी

परीक्षाओं की तैयारी के लिए भी झारखंड के विद्यार्थियों को दिल्ली भेजा जाएगा। पहले चरण में एस टी वर्ग, दूसरे चरण में एस सी और बाद में ओबीसी वर्ग के विद्यार्थियों को इसका लाभ मिलेगा। मंत्री चमरा लिंडा ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता है कि झारखंड के प्रत्येक मेधावी विद्यार्थी को अपनी प्रतिभा निखारने का समान अवसर मिले। झारखंड में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। जरूरत है सुधार और सुविधाओं के निर्देश दिए। आज का युग तेज प्रतिस्पर्धा का है, और हमें अपने विद्यार्थियों को संसाधनों व मार्गदर्शन से सशक्त बनाना होगा।

## अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने नगर कीर्तन में हाजरी भरी

अमृतसर 7 अक्टूबर (साहिल बेरी)

मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश गुरुपर्व पर निकाले गए नगर कीर्तन में हाजरी भरी। उन्होंने सरबत के भले की अर्पणा की। माता कौलां जी भलाई केंद्र के भाई गुरुद्वारा सिंह ने मेयर को सिरोपा डाल कर आशीर्वाद दिया। मेयर भाटिया ने कहा कि गुरुनगरी ऐतिहासिक शहर है, जहां रोजाना लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। इसी के साथ ही पावन पर्व सहित अन्य त्योहारों को लेकर भी निगम पूरी तरह से सजग है। जिसमें संगत की सुविधा के लिए सफाई व्यवस्था व अन्य प्रबंध पहले के आधार पर किए जा रहे हैं। इसमें उनके साथ ही निगम कमिश्नर बिक्रमजीत सिंह शेरगिल



भी दिन के अलावा रात को भी सड़कों पर निकल रहे हैं। आने वाले समय में श्री हरिमंदिर साहिब को जाने वाली चार मुख्य सड़कों को भी हेरिटेज लुक देने जा रहे हैं। इसमें इन सड़कों पर मूलभूत

सुविधाओं की उपलब्धता का भी खयाल रखा जाएगा। मेयर ने कहा कि गुरुनगरी के विकास को लेकर नगर निगम विभिन्न योजनाओं पर काम कर रहा है।

## भाजपा नेता पीतावस पांडा की गोली मारकर हत्या

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूवनेश्वर : ओडिशा में कानून-व्यवस्था चरमरा गई है। पिछले कुछ दिनों में हुई हिंसा इसका सबूत है। कल रात 10 बजे ब्रह्मपुर शहर में वरिष्ठ वकील और बार काउंसिल के सदस्य, भाजपा नेता पीतावस पांडा की नजदीक से गोली मारकर हत्या कर दी गई। 115 घंटे से ज्यादा समय की मशवकत के बाद पुलिस ने दोनों अपराधियों को पता लगा लिया है। बीजद ने आरोप लगाया है कि कल गंजम में कुमार पुर्णिमा के बड़े त्योहार के दौरान कोई सक्रिय गश्त नहीं थी। इसलिए अपराधी इतना जघन्य अपराध करने के बाद फरार हो गया। बीजद ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर राज्य सरकार पर निशाना साधा है। कहा गया है कि जिस जगह उसकी हत्या हुई, वहां से सीसीटीवी फुटेज भी हटा दिया गया था। स्थानीय है कि यह एक सुनियोजित हत्या थी। मत्तनीय आईआईसी और बरहामपुर पुलिस जिले के एएसपी

पीतावस पांडा। लक्ष्मी बस की हत्या हो रही है। रेत, खदान भी लूटी जा रही है। ये दोनों विभाग मंत्री विभूति जेना के पास हैं। लेकिन वह कहते हैं, किसी को बख्शा नहीं जाएगा। कहीं भी कोई दोषी नहीं पकड़ा जाएगा। गंजम में एसआई परीक्षा घोटाला भी हुआ। चौदर जेल से दो कैदियों को कोड़े मारे जा रहे हैं। भाईचारे का शहर कटक अशांत है। विश्वास में एक हत्या हुई। कितनी हत्याएं हो रही हैं, इसका कोई हिसाब नहीं है। सरकार को पीतावस पांडा की हत्या की सक्रिय जांच करनी चाहिए। मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी ने घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया है और कड़ी निंदा की है तथा पुलिस प्रशासन को घटना में शामिल दोषियों को ढूंढकर कड़ी सजा देने का निर्देश दिया है।

पीतावस पांडा की हत्या हो रही है। रेत, खदान भी लूटी जा रही है। ये दोनों विभाग मंत्री विभूति जेना के पास हैं। लेकिन वह कहते हैं, किसी को बख्शा नहीं जाएगा। कहीं भी कोई दोषी नहीं पकड़ा जाएगा। गंजम में एसआई परीक्षा घोटाला भी हुआ। चौदर जेल से दो कैदियों को कोड़े मारे जा रहे हैं। भाईचारे का शहर कटक अशांत है। विश्वास में एक हत्या हुई। कितनी हत्याएं हो रही हैं, इसका कोई हिसाब नहीं है। सरकार को पीतावस पांडा की हत्या की सक्रिय जांच करनी चाहिए। मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी ने घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया है और कड़ी निंदा की है तथा पुलिस प्रशासन को घटना में शामिल दोषियों को ढूंढकर कड़ी सजा देने का निर्देश दिया है।

## पुरी जिले के कणाश में लक्ष्मी बस के अंदर आतंक: एक युवक ने 7 यात्रियों पर बेरहमी से हमला किया

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूवनेश्वर : पुरी के कणाश में एक जघन्य घटना घटी। एक युवक ने बस में घुसकर यात्रियों को घायल कर दिया। घटना में सात लोगों को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। लक्ष्मी बस में यात्रा कर रही थी, तभी एक युवक ने बस में घुसकर सात लोगों को बेरहमी से घायल कर दिया। सूचना मिलने पर कानस पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी अभी गडिशा गडा पुलिस थाने में है। जानकारी के अनुसार, लक्ष्मी बस पुरी कणाश से गडिशा गडा जा रही थी। बिंधन चैक के पास अचानक बस की पिछली सीट पर बैठा एक युवक आया और आगे बैठे यात्री पर हमला कर दिया। हालांकि, युवक द्वारा किए गए हमले के पीछे के मकसद के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाई है।



## एक शाम वीर तेजाजी महाराज के भव्य तेजा गायन सम्पन्न

हैदराबाद शमशाबाद हमीदुल्ला नगर स्थित वीर तेजा जाट समाज तेलंगाना में सर्व 49/1 हमीदुल्ला नगर में वीर तेजाजी महाराज के प्रांगण में पावन अवसर पर वीर तेजाजी महाराज का भव्य तेजा गायन सोमवार 6 अक्टूबर को पुजा-पूजा-अर्चना व जाट समाज समाज बन्धुओं व भक्तों के सानिध्य में आयोजित किया गया। जारी प्रेस विज्ञप्ति में वीर तेजा जाट समाज तेलंगाना सर्व 49/1 हमीदुल्ला नगर के कार्यकारी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से बताया कि हर वर्ष की भांति लागातार आठवीं बार के पावन अवसर पर वीर तेजाजी महाराज का भव्य जागरण व तेजा गायन समाज बन्धुओं के सानिध्य में आयोजित किया गया। वीर तेजाजी महाराज का विशेष श्रृंगारण, पूजा-अर्चना

व आरती के पश्चात्पथारे भक्तों एवं समाज बन्धुओं व रात्रि 7.15 बजे ज्योत प्रज्वलितकर एक शाम वीर तेजाजी के नाम तेजा गायन का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम गणपति वन्दना के साथ कार्यक्रम का आगाज किया व देर रात तक मरुधरा की दरियावजी धोलिया गादीपति भोपाजी के सानिध्य में व तेजा गायन पार्टी सालगराम बांगड़ा सिलारिया एण्ड पार्टी कालुराम लंगोड एण्ड पार्टी राजस्थान वीर तेजाजी महाराज भजनों के पुष्प अर्पित किये। जिसमें वीर तेजाजी महाराज के भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। भक्तों ने वीर तेजाजी महाराज अमर रहे के नारे लगाकर नाचते गाते हुए मंदिर प्रांगण को भक्तिमय बना दिया। अंतरराष्ट्रीय नृत्य कलाकार अनु

सोलंकी, राजेन्द्र राठौड़, मटकी डॉस प्रेम मण्डा बाड़मेर ने नृत्य डॉस किया है। समाज गणमान्य पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। समाज बन्धुओं ने तेजाजी महाराज की तस्वीर रखकर पूजा-अर्चना, दर्शन-वंदनकर, श्री तेजाजी महाराज के चरणों में धूप बत्ती, नारियल एवं पुष्प अर्पितकर खुशहाली की कामना की। रात्रि 7=15 बजे से महाप्रसादी की व्यवस्था की गयी। जिसका जाट समाज बन्धुओं ने सपरिवार लाभ लिया। कार्यक्रम में वीर तेजा जाट समाज तेलंगाना के परमेश्वर यदुवरा, कलाल भाई, रामनिवास गोरछिया, गणेशाराम ढाका, गुलाबराम बागड़ा, भंवरलाल सोडा, ओमप्रकाश साँवर रामकिशोर मिर्धा अमराराम धोजक, दामोदर लोख,

छगनाराम पुनिया, लिखमाराम पुनिया, तुल्लाराम बैरा, हजारीराम गोदारा, कोजाराम नैण, ओमप्रकाश बडियासरा, गोपालराम जाखड, रामदीन भारी, टिकुराम सारण, सोहनराम भान्णू, आईदान छावा, सुरेश बडियासरा, मोहनराम तर्ड, पप्पाराम तर्ड, रामप्रताप जाखड, सुरजाराम कुकणा, प्रहलाद डेरू, मांगीलाल सिरडीया, समस्त कार्यकारणी सदस्यगण व समाज बन्धु सपरिवार उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशेष कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। लाईव सीधा प्रसारण पी एम एल सीरवी यूट्यूब चैनल पर किया। मंच का संचालन दरियावजी धोलिया गादीपति भोपाजी ने किया। आरती के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।